"तुम्हारी यहा आदत मुझे पसंद नहीं है। मैं एक बात पूछ रहा हूं तुम उसे मजाक में उड़ा रहे हो।"

"अच्छा देखो, राइटर से पूछता हूं।"

"क्या पूछोगे ?"

"अगर यहां टेलीफोन हो तो आरिफ साहब से बात की जाए।"

उसने मुंह में तौलिया लपेटा और करवट ले ली।

"एक सौ नौ हवालाती बंद, ताला, जंगला, बत्ती, ठीक आठ नंबर। पहरेदार ने आवाज दी। लौटकर चबूतरे पर लेट रहा।

सुबह होते ही हमें जगा दिया गया। बाहर दोनों बैरकों की गिनती परेड हुई। फिर कल ही की भांति प्रार्थना की अंतिम कड़ी होते-होते कैदी अपने-अपने तसलों में पानी लेकर लैट्रिन की तरफ भाग गए। हम फिर अपनी बैरक में आ गए। आज लोगों ने बाहर बिस्तर नहीं लगाए। थोड़ी देर में नाश्ता परेड शुरू हुई। वही कल वाला दलिया। उसी तरह आज फिर कैदी उस पर टूटे। झगड़ा किया।

फिर बाहर चक्कर में लाकर हमें उसका एक चक्कर लगवाया गया। कल की ही भांति रशीद और गौतम दिखे हमें। उन्होंने इशारे से हमें नमस्कार किया। इशारे से ही हमने उत्तर दे दिया। हमने देखा आज जेलर चक्कर में कुर्सी डाले बैठा था। उसके सामने बेंच पर विश्वनाथसिंह बैठे थे। लंबा कुर्ता और जांघियां पहने। छोटी-छोटी दाढ़ी थी उनके। जाने क्यों उन्हें देखकर मुझे गणेश जी की याद आई।

जेलर ने चक्कर से हमें बुला लिया। रशीद और गौतम को भी।

"बैठिए", हम गए तो उसने हमें बेंच पर बैठने को कहा। हम विश्वनाथसिंह की बगल में बैठ गए।

"कहिए आप लोगों को कोई तकलीफ है ?" जेलर ने हमसे पूछा।

हमने कोई उत्तर नहीं दिया।

"आपके विचार में इन्हें वहां बहुत आराम है।" विश्वनाथसिंह ने कहा।

"आप जैसे रखेंगे वैसे हम रहेंगे।" मित्तर ने कहा।

"हमें आपसे कोई दुश्मनी तो है नहीं।" जेलर ने हमें समझाया, "लेकिन हम क्या करें, हम भी तो किसी के नौकर हैं।"

"जो भी हो आप इन्हें यहां से हटाकर कहीं और रखिए।" विश्वनाथसिंह ने कहा।

"हमने आपको बताया न, इन लोगों को आप लोगों से अलग रखने का हुक्म है। पता नहीं इन लोगों ने क्या किया है?" उसने कहा और हमें देखकर मुस्कराया।

"मैं अपने बच्चों की कसम खाकर कहता हूं हम लोग बिलकुल बेगुनाह हैं।" मित्तर बोला।

"यह तो आप कहते हैं, सरकार तो नहीं कहती।"

"सरकार तो हर उस आदमी के खिलाफ होगी जो अपने अधिकारों के लिए लड़ेगा।" विश्वनाथसिंह बोले।

जेलर हंसने लगा।

"हम लोगों को दो कंबल मिले थे उसकी जगह हमें एक ही दिया गया, वह भी पुराना और फटा। चटाई हमें अभी तक नहीं मिली।" मित्तर ने कहा।

"मिल जाएगी। कंबल भी दो हो जाएंगे।" जेलर ने कहा।

"यह सब कुछ नहीं। आप इन्हें दो नंबर में कर दीजिए।"

"कैसे कर दूं।" जेलर ने अपनी विवशता जाहिर की, "आप मेरी नौकरी लेंगे क्या?"

"यह सब मैं नहीं जानता। आप सब कर सकते हैं।" विश्वनाथसिंह ने कहा।

"कोशिश करूंगा।"

"कोशिश नहीं। आज रात इन्हें वहां न रहना पड़े।"

"ठीक है।"

"ठीक क्या है, आप इन्हें वहां भेज दीजिए कोई पूछे तो कहिए। मैंने कहा है।"

जेलर हंसने लगा, "आप कहते हैं जरूर हो जाएगा।"

विश्वनाथ सिंह ने गौतम की पीठ पर हाथ रखा-घबराओ नहीं। सब ठीक हो जाएगा। वहीं उनकी बगल में बैठा था।

"आपके ही सहारे हम लोग यहां हैं।" मित्तर बोला।

"किसी के सहारे दुनिया में काम नहीं चलता।" विश्वनाथ सिंह ने कहा।

"आदमी को अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए। आप लोगों के नाम क्या है?"

"हमने अपने नाम बताए।"

"पहली बार जेल आए हैं?"

"जी हां।"

"तभी दुबारा आइएगा तो कोई कष्ट नहीं होगा।"

"अब आप यह सब न समझाइए इन्हें। बेचारे एक बार फंस गए। बार-बार आकर क्या करेंगे।" जेलर ने कहा, "जाइए आप लोग।"

हम उठकर खड़े हो गए।

"आज शाम तक ठीक हो जाएगा?" हम चलने लगे तो विश्वनाथ सिंह ने जेलर से कहा।

"जी हां। आप कहते हैं तो जरूर हो जाएगा।"

हम अपनी बैरक में आ गए। गौतम और रसीद अपनी बरक में चले गए। राइटर और कुछ कैदी गेट पर खड़े हमें जेलर के पास बैठे बात करते देख रहे थे।

"क्या बात थी?" राइटर ने पूछा।

"कुछ नहीं। दूसरी बैरक में जाने की बात हो रही थी।"

"कब जाइएगा?"

"शाम तक शायद प्रबंध हो जाए।"

राइटर कुछ उदास हो गया।

थोड़ी देर में आरिफ साहब चाय लेकर आ गए, "माफ कीजिएगा" उन्होंने कहा, "कल मैं आ नहीं सका। असलियत में पता लगा है कि आप लोगों के लिए सेक्रेटेरियट से टेलीफोन आया था। तभी सुपरिंटेंडेंट ने ऐसा किया।"

"कैसा टेलीफोन?" मित्तर जरा आगे खिसक आया।

"यही आया होगा कि इन लोगों की खातिर कर दीजिए।" आरिफ

साहब हंसे।

"फिर ?"

"फिर क्या। हम लोगों ने जेलर से कह दिया कि अगर तुरंत आप लोगों को यहां से हटाया नहीं गया तो हम लोग भूख हड़ताल कर देंगे।"

"आज विश्वनाथ जी से जेलर की बात हो रही थी।" प्रभात ने कहा।

"अच्छा क्या कहा उसने ?"

"कहा है शाम तक कुछ करेगा।"

"नत्थु वल्द खैरा, रहमत वल्द मुन्ना, हाजी वल्द शिफात···" राइटर हाथ में छोटी-छोटी परचियां लिए पुकार रहा था।

आरिफ साहब चाय पिलाकर चले गए, "देखिए वक्त मिला तो शाम को आऊंगा।" चलते समय उन्होंने कहा।

"चलो मिलाई वाले सब जल्दी करो" राइटर ने एक बार फिर से सबके नाम पुकारे।

"हम लोगों का पर्चा नही आया ?" मित्तर ने पूछा।

"इसमें तो नहीं है।"

मिलाई वाले नंबरदार के साथ चले गए।

"यह हम लोगों के लिए टेलीफोन क्यों आया ?" जयसिंह ने पूछा।

"पता नहीं।" मैने कहा।

"हम लोगों को यहां भेजा ही क्यों गया ?" प्रभात ने कहा, "हमारे पास इसका भी उत्तर नहीं था।"

अपनी कुछ मांगो को लेकर हम लोग शांतिपूर्ण आंदोलन चला रहे थे। तभी हमारे कुछ सदस्यों का काउंसिल हाउस के एक गार्ड से झगड़ा हो गया। हमारा आफिस काउंसिल हाउस के अंदर ही था। गार्ड हमारे सदस्यों से बिला वजह उलझ गया था। लगता था जैसे उसे इसी काम के लिए समझा-बुझाकर भेजा गया है। बीच में एक एम० एल० ए० महोदय भी पता नहीं कहा से आ गए। बिना बुलाए। तू तकरार और फिर कुछ छीना-झपटी हुई। एम० एल० ए० महोदय का कुर्त्ता कुछ फट गया। बाकी

उन्होंने स्वयं फाड़ डाला और जाकर मुख्य मंत्री को दिखा आए। समूचा सरकारी तंत्र हमारे खिलाफ हो गया। हमारे ऊपर यह आरोप लगाया गया कि हम सरकार उलटना चाहते हैं। और घटना के तीसरे दिन रातोंरात हमें अरेस्ट कर लिया गया।

"लीजिए आप लोगों का भी बुलावा आ गया।" राइटर ने कहा। पर्चे में रशीद और गौतम के नाम भी थे।

"वह लोग तो एक नंबर में हैं।" मैंने कहा।

"आप चलिए उन लोगों को भी बुला लिया जाएगा।" उसने हमसे कहा फिर नंबरदार से बोला, "यह दो आदमी एक नंबर में हैं। उनको भी साथ ले लेना।"

चक्कर में आकर हम रुक गए। नंबरदार रशीद और गौतम को बुलाने चला गया। यहां चक्कर मुंशी के पास से हम लोगों के नए पर्चे बने। और हम लोग उसी नंबरदार के साथ उस गैलरी से होते हुए वहां आए जहां हम लोगों की डाक्टरी हुई थी और पहली बार हमारा नाम रजिस्टर में लिखा गया था।

"देखो यहां से निकलना कब होता है।" मित्तर ने गैलरी से गुजरते हुए कहा।

"निकलना भी होगा। क्यों निराश होते हो।" प्रभात ने कहा। मैं दीवारों पर लिखे उपदेश पढ़ता रहा। 'अपने रहने के स्थान को सदा साफ रखो।' 'अहिंसा मनुष्य का परम धर्म है' आदि। मैं सोचने लगा यहां इन वाक्यों के स्थान पर उमर खैयाम की रुबाइयां लिखी होतीं तो अधिक अच्छा होता।

गैलरी के दूसरे सिरे वाले फाटक से निकलकर काफी खुला मैदान पड़ता था। इसमें शुरू में दाहिने हाथ बावर्चीखाना था, जिसमें सारे कैदियों का खाना इकट्ठा बनता था। उसी तरह के बड़े-बड़े बाल्टे, जिनमें बैरकों में खाना आता था, वहां फर्श पर रखे थे और उनमें असंख्य मक्खियां भिनभिना रही थीं। इसके ठीक सामने दूसरी बैरक बनी थी, जिसका फाटक बंद था। बाहर एक चौकीदार खड़ा था। अंदर फाटक से एक कैदी झांक रहा था। वह कैदियों वाले कपड़े पहने था और उसके काफी

घनी काली दाढ़ी थी।

"यहां भी कैदी रहते हैं ?" मैंने साथ वाले नंबरदार से पूछा।

"जी हां, फांसी वाले हैं।"

मैंने दुबारा उस कैदी को देखना चाहा जो फाटक के अदर से झांक रहा था। परंतु हम आगे बढ़ आए थे।

आगे मैदान मे नीम के दो-तीन बड़े पेड़ थे। इन्हीं पेड़ों के सामने दाहिने हाथ पर खपरैल की छत वाला वह बरांडा था, जिसमें वर्मा साहब बैठते थे जहां पहले दिन हमें पुत्तन मिला था। बरांडे में कंबल बिछे थे। वर्मा अपनी कुर्सी पर बैठा था। कंबल पर कुछ कैदी और शायद उनके मिलने वाले बैठे बातें कर रहे थे।

हमें भी कंबल पर बिठा दिया गया।

"मिलाई वाले लोग कहां है ?" मैंने नंबरदार से पूछा।

"बैठिए अभी आते है।" उत्तर वर्मा ने दिया। मुझे लगा कि वह हंसा भी।

"चलिए आप लोग अब जाइए। वक्त हो गया।" उसने वहां बैठे हुए लोगों से कहा। उन्होंने बड़ी मिन्नत वाली दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"आध घंटे से ऊपर हो गया।" भाई वर्मा घडी देखने लगा। उसने नंबरदार को पर्चा देकर बाहर भेज दिया। एक और नंबरदार को दूसरा पर्चा बनाकर और कैदियों को बुलवाने के लिए भेजा।

"चलिए-चलिए अब बहुत वक्त हो गया।"

वे लोग उठ पड़े मिलने आए हुए लोग बाहर की ओर, कैदी अंदर गैलरी की ओर। कैदियों के साथ एक नंबरदार भी था।

"कहिए आप लोग मजे में है ?" वर्मा ने हमसे पूछा।

"जिस मजे में हैं वह तो आप जानते ही होंगे।" प्रभात ने उत्तर दिया।

वर्मा मुस्कराया।

"कितनी देर मुलाकात होती है ?" मित्तर ने पूछा।

"जितनी देर आप चाहें।" वर्मा फिर मुस्कराया।

"थैंक यू मोर आनर।" गौतम ने पूछा।

नंबरदार के साथ ढेर सारे लोग आ गए। उन्हें देखते ही हम उठकर

खड़े हो गए। सभी के चेहरे खिंचे हुए थे। कुछ के हाथों में थैले आदि थे। हम हंस रहे थे। हमें हंसता देखकर वे लोग भी मुस्कराए और लपक-कर हम लोगों से गले मिलने लगे। सारा बरांडा हमसे मिलने आए लोगों की भीड़ से घर गया।

अधिकतर यूनियन के मेंबर थे। अन्य यूनियनों के पदाधिकारी भी थे कुछ। मेरा छोटा भाई और प्रभात का बड़ा भाई था। गौतम के बच्चे भी किसी के साथ आ गए।

थैलों में ढेर सारा सामान भरा था। बिस्कुट के पैकेट, सिगरेट, आम, खरबूजे आदि।

एक व्यक्ति ने आठ बंडल बीड़ी निकालकर प्रभात को दी।

"यह क्या होगी ?" प्रभात बोला।

"यह यहां की करेंसी है। एक कैदी को एक बीड़ी देकर एक घंटे काम करा सकते हो।" उसने कहा। नेगी ने हम लोगों को सारी स्थिति से अवगत कराया। जो सर्कूलर आदि निकले थे, उनकी एक-एक कापी दी हमे। उसने बताया कि सारे मेंबर आतंकित हैं। सब जगह तार दे दिए गए हैं। हम लोग चिंता न करें, आदि आदि। कल कोर्ट खुलते ही बेल अपली-केशंस मूव कर दी जाएंगी। शायद कल ही हम लोगों के लिए 'बी क्लास' का आर्डर भी हो जाए।

मैंने देखा गौतम का बच्चा उसकी गोद में मिसक रहा था।

जाने कैसे हम लोग छोटे-छोटे गोलों में बंट गए थे और हम अंदर की, वे बाहर की खबरें दे रहे थे।

अखबार और पत्रिकाएं भी ढेर सारी आ गई थीं।

मित्तर भी हम लोगों के साथ बैठा था। उसकी आर्गेनाइजेशन का कोई व्यक्ति नहीं आया था। कोई एक डिब्बे में मिठाई लिए था। उसे उसने जिद करके हमें वहीं खिलाया। प्रभात के बड़े भाई थर्मस में चाय लिए थे। बारी-बारी से कप में उड़ेलकर अंदर वालों ने चाय पी। किसी के पास पान भी थे। अत: पान-सिगरेट भी चलीं।

"अच्छा अब आप लोग खत्म कीजिए तो औरों को बुलाएं।" तभी वर्मा ने कहा।

परंतु हम लोग बिना उसकी बात का ध्यान किए उसी प्रकार बैठे रहे। कुछ देर बाद वर्मा ने हमें दुबारा टोका तो हम लोग उठकर खड़े हो गए। गौतम का बच्चा उसकी गोद मे जमा बैठा था और वह उसकी गोद से उतर ही नही रहा था। वह रोता जा रहाथ ा और साथ-साथ गौतम को पीटता भी जा रहा था।

"सुनिए जरा यह क्या कह रहा है।" गौतम ने कहा।

हमने देखा वह गौतम को पीट रहा था। साथ-साथ कहता जाता 'मादर पोस, यहां आ गए। मादर पोस, साले।'

सबने एक-दूसरे से हाथ मिलाए। कुछ गले मिले। कुछ चलते समय फिर उदास हो गए।

"किसी से रुपए ले लो," मैंने प्रभात को याद दिलाया। चार-पांच रुपये प्रभात ने ले लिए। मैंने भी दो रुपए अपने छोटे भाई से ले लिए।

मुझे रमेश की बात याद आ आई रुपए चप्पल के तले में रखने वाली। परन्तु जहां इतना सामान थैलो मे हमारे साथ था रुपये भी मैंने ऊपर ही रहने दिए। हां पतलून की चोर पाकेट मे जरूर रख लिए।

गैलरी मे घुसते समय मैंने देखा, फांसी वाली बैरक मे वह कैदी उसी प्रकार सीखचे पकडे खडा हमारी ओर निहार रहा था।

चक्कर मे आकर गौतम और रशीद अपनी बैरक मे चले गए। हम लोग अपनी बैरक मे आ गए। कुछ बिस्कुट, सिगरेट और बीडी के बंडल हमने गौतम को दे दिए। दो बंडल जगसिंह ने रख लिए।

बैरक मे आते ही राइटर हमारे पास आ गया।

"चाय शक्कर के लिए कह दिया आपने?" उसने पूछा।

हम वास्तव में भूल गए थे।

सारे कैदी हमारे थैलों की ओर देख रहे थे। परंतु कोई ईर्ष्या-भाव उनके नेत्रो मे हो, ऐसा हमें नहीं लगा। एक विवशता या निरीहता की भावना अवश्य लगी मुझे।

मित्तर जब से लौटकर आया था काफी उदास था। शायद इसलिए कि उसकी आर्गेनाइजेशन का कोई सदस्य उससे मिलने नहीं आया था।

कोई डेढ़ बजे बैरक का दरवाजा बंद हो गया। बैरक में अंदर आज-कल या परसों की अपेक्षा अधिक चहल-पहल थी। जो लोग मिलाई पर गए थे, वे अपने-अपने मुलाकातियों द्वारा प्राप्त की गई वस्तुएं सहेज रहे थे। किसी के यहां से गुड़ आया था, किसी के यहां से खरबूजे आदि। इन लोगों के चेहरों पर प्रत्यक्ष प्रफुल्लता के चिह्न थे।

इसके विपरीत कुछ लोगों के चेहरे उदास थे। कुछ कैदी चिंतित भी दीख रहे थे। वे संभवतः ऐसे लोग थे जो पूरे एक सप्ताह से किसी के आने की आशा लगाए बैठे थे। परंतु कोई भी उनसे मिलने नहीं आया था। हर बार जब किसी की मिलाई की परची आती तो उनकी उत्सुक आंखें राइटर की ओर उठ जातीं। परंतु जब वे राइटर के मुख से अपना नाम न सुनते तो उनके चेहरे फिर लटक जाते।

फाटक बंद हो जाने के बाद राइटर पूरी बैरक में राउंड ले रहा था। वह एक-एक चबूतरे पर जाकर टोह ले रहा था कि किसके यहां से क्या सामान आया है।

सारी खोज खबर लेने के पश्चात् वह हमारे चबूतरे पर आकर बैठ गया।

"खाना-पीना हो गया?" उसने पूछा।

"अभी नही आपका ही इंतजार था।" मैंने कहा।

"मेरा खाना तो रक्खा है। बस चटनी बनवानी है। आप खाइए।"

"वाह, यह कैसे हो सकता है आप भी खाइएगा हमारे साथ।"

"आप कहते हैं तो खा लेता हूं। वैसे आप लोगों से मुहब्बत बढ़ाने मे क्या फायदा!"

"क्यों?"

"आप लोग रहेंगे ही नहीं यहां। एक आध दिन में दूसरी बैरक में चले जाएंगे।"

प्रभात खाना निकालने लगा था। जयसिंह तसले-कटोरी धोकर ठीक मे रख रहा था।

"जब जाएंगे तब देखा जाएगा। अभी तो यहीं हैं।" मैंने कहा।

"रुकिए, अच्छा।" वह बोला, "चटनी बनवा लूं।" और वह रामपति को आवाज देने लगा।

रामपति कुछ दूर पर एक चबूतरे पर कुछ लोगों से बैठे बातें कर रहा था। उसने मुड़कर राइटर की ओर देखा।

"चटनी नहीं बनेगी आज बेटा?"

रामपति उठकर खड़ा हो गया।

"देख, मेरे चबूतरे के सिरहाने अमियां रखी होंगी। नमक भी वहीं होगा पुड़िया में। शक्कर तो आप लोगों के पास होगी नहीं?"

"नहीं शक्कर तो नहीं है।" प्रभात ने कहा।

"अच्छा देखिए, गुड का इंतजाम करता हूं।" उसने कहा और उठकर खड़ा हो गया। एक सेकेंड वहीं खड़ा रहा। किसके पास हो सकता है? खड़े-खड़े एक निगाह बैरक में दौड़ाई। ठीक। वह आगे बढ़ गया और एक चबूतरे के पास जाकर रुक गया।

"राम अभिलाख गुड़ निकाल जरा बेटा थोड़ा-सा।"

"गुड़ कहां। सब खतम हो गया।" उसने कहा।

"खतम हो गया? अच्छा थैला कहां है?"

"थोड़ा-सा है बस।"

"निकाल, निकाल। थोड़ा-सा ही चाहिए बस।"

गुड़ लेकर उसने रामपति को दिया जो अमियां छील चुका था और उनकी फांके तराश रहा था। जरा ठीक से पीस बेटा। महीन-महीन। और वह लौटकर हमारे चबूतरे पर आ गया।

खाना खाकर हमने खरबूजे काटे। राइटर ने रामपती को बुलाकर उसे भी दो फांकें दे दीं।

"और दे दीजिए।" मैंने कहा।

"नहीं, नहीं, बस। जा बे।" और हमसे बोला, "इस तरह बांटिएगा तो हो चुका। यह जेल है!"

वह हर चीज ऐसे खाता और कहता था जैसे उसमें उसे कोई स्वाद ही न मिलता हो। खरबूजा खाने से पहले, खरबूजे की बुराई करता या कहता

अगर कोई फल मुझे नापसंद है तो खरबूजा। सिगरेट लेने से पहले वह कहता 'आप पीजिए, मुझे तो बीड़ी में जो मजा आता है वह सिगरेट में नहीं।'

जयसिंह जूठे तसले-कटोरी धो रहा था।

"आप अपने हाथ से धोते हैं? अच्छा देखिए आपके लिए नौकर का इंतजाम करता हूं।" वह बोला।

"नहीं, नहीं इसमें क्या है। धुल जाएंगे।" प्रभात ने कहा।

वह इधर-उधर बैरक में देख रहा था, "धुल तो जाएंगे ही। कोई और धो देगा तो आपको आब्जेक्शन है क्या? उसका भी भला हो जाएगा। एक सिगरेट ही मिल जाएगी। यहां अभी आप समझते नहीं एक सिगरेट पिलाकर एक घंटा पांव दबवाइए।"

"हां, हां ठीक है किसी कैदी को कह दीजिए।" मित्तर ने कहा।

राइटर उठकर चलने लगा, "देखिए कोई बढ़िया आदमी देता हूं आपको।"

"रमेश से कह दूं मैं!" मैंने कहा।

वह चलते-चलते रुक गया, "देखिए वैसे तो आपकी मर्जी। मगर एक बात कहूं। अगर बुरा न माने तो। ज्यादा लिफ्ट न दीजिए उसे। आप समझते नहीं अभी यहां लोगों को। चपत पड़ेगी तब पता चलेगा।"

मैं चुप रहा।

"इसकी क्या जरूरत थी?" राइटर चला गया तो प्रभात ने मित्तर से कहा।

"आखिर हमारा इतना सामान खाता-पीता है, यह भी नहीं करेगा।" मित्तर ने राइटर के लिए कहा।

"वाह।" प्रभात हंसने लगा।

राइटर एक लड़के को पकड़ लाया था। काफी दयनीय-सी शक्ल थी उसकी।

"बैठ यहां।" राइटर ने उस लड़के को हमारे चबूतरे के बगल में फर्श पर बिठा लिया, "आज से साहब लोगों की सेवा करना। तेरी चिट्ठी भी लिख देंगे यह और खाने-पीने को भी कुछ मिल जाया करेगा। कुछ करना नहीं है। बस, पानी-वानी भर देना। बर्तन साफ कर देना। कपड़ा धो देना,

समझे।"

वह बहुत ही निरीह दृष्टि से हमारी ओर देख रहा था।

"जा, यह बर्तन धो ला हौदिया में। घड़ा लेता जा एक।" राइटर ने कहा।

लडका बर्तन और घड़ा लेकर चला गया।

प्रभात चबूतरे पर बैठ गया था। तौलिये से उसने अपना मुंह ढंक लिया था। जयसिंह जंगले के पास खडा अखबार को तह करके उससे पंखा कर रहा था। उसके बुरी तरह पसीना निकल रहा था। मैंने एक पत्रिका उठा ली थी।

राइटर उठकर खडा गया।

"अच्छा अब आप लोग आराम कीजिए मै भी चलू।"

हमने कोई उत्तर नही दिया।

वह उठकर चल दिया। परंतु थोडी दूर चलकर लौट आया, "कोई मैगजीन हो तो हमको भी पढने को दीजिए।" उसने कहा। मैंने पत्रिकाएं उसकी ओर बढा दी···हा, हां जरूर।

उसने एक-दो पत्रिकाएं छांट ली और लेकर चला गया।

लडका बर्तन धोकर ले आया। काफी मेहनत से धोया था उसने उन्हे।

"क्या नाम है तुम्हारा?" मैंने पूछा।

"शांति।"

"शांति? यही पूरा नाम है?"

"शाति परकाश।" उसने कहा।

"सिगरेट पियोगे? पीते हो?" मैंने पूछा।

वह खामोश रहा।

"पीते हो तो लो। मैंने सिगरेट निकालकर उसकी ओर बढा दी।"

उसने सिगरेट ले ली।

"बैठ जाओ।" मैंने कहा।

वह बैठ गया और सिगरेट पीने लगा।

"चिट्ठी किसे लिखनी है?" मैंने पूछा।

"घर वालों को।"

"कहां ?"

"बस्ती।"

"बस्ती के रहने वाले हो ?"

"जी हां।"

"यहां कोई नहीं है ?"

"नहीं।"

"घर पर कौन है ?"

"मां है। छोटी बहन है। विधवा भाभी और उनका एक लड़का।"

"बाप ?"

"बाप नहीं है।',

"मृत्यु हो गई ?"

"जी हां।"

"यहां कैसे आ गए ?"

"नौकरी करने आया था। मगर पुलिस ने पकड़ लिया।"

"क्यों ?"

"बाजार में एक दूकान से बरांडे में सो रहा था रात को। पुलिस वाले आए मुझसे रुपया मांगने लगे। मैंने कहा मेरे पास रुपया नहीं है। उन्होंने थाने में ले जाकर बंद कर दिया।"

"बस इसीलिए ?"

"जी।"

"दफा ?"

"मालूम नहीं।"

"पढ़े हो ?"

"नहीं ?"

"कौन जाति हो ?"

"अहीर।"

"कितने दिन से हो यहां ?"

"दो महीने हो गए।"

"पेशी हुई एको ?"

"जी एक हुई ।"
"जमानत ?"
"जमानत नहीं हुई ।"
"पिछली पेशी पर कोई आया था ?"
"नहीं ।"
"घर में खबर है ?"
"जी हां ।"
"किसने खबर दी ?"
"यहां से चिट्ठी छुड़वाई थी ।"
"कोई आया था ?"
"मां और बहन आई थीं ।"
"कब ?"
"इससे पहले वाले एतवार को । आज आने को कहा था। पता नहीं क्यों नहीं आईं ।"
"किसे चिट्ठी लिखनी है मां को ?"
"जी ।"
"पोस्टकार्ड है ?"
"नहीं ।"
"फिर ?"
"आपके पास हो लिख दीजिए । मुझे मिलेगा तो दे दूंगा ।"
"मेरे पास नहीं है। अच्छा देखो बताता हूं। मैं कागज में लिखकर भिजवा दूंगा, पहुंच जाएगी । क्या लिखना है ?"
"मा को लिख दीजिए कि आने को कहा था आई क्यों नहीं। अगले इतवार को जरूर आए ।" वह रुक-रुककर बोल रहा था, "और लिख दीजिए आए तो दो-एक रुपया और थोड़ा गुड़ लेती आए ।"
मैंने कागज निकालकर इतना लिख दिया ।
"बस ? मैंने पूछा ।"
"जी ।"
"छोटी बहन को प्यार और भाभी को नमस्ते ?"

"लिख दीजिए।"

मैंने चिट्ठी लिखकर उससे पता पूछकर उस पर लिख दिया, "कोई आदमी आएगा तो मैं भिजवा दूंगा। वह टिकट लगा देगा।" मैंने कहा।

उसने मुझे बड़े कृतज्ञ भाव से देखा।

"पांव दबा दूं आपके?"

"नहीं-नही। पांव नही दबवाना मुझे।" मैंने कहा, "खरबूजा खाओगे?"

"नहीं।"

"लो, एक ले लो।"

"आप खाइए।"

"हम लोगों के लिए है।" मैंने एक खरबूजा उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

उसने खरबूजा ले लिया।

"जाओ आराम करो जाकर।" मैंने कहा।

वह उठकर चला गया।

"सारी हिस्ट्री पूछ ली?" वह चला गया तो प्रभात ने कहा।

"तुम सोए नहीं?"

"गर्मी बहुत है। इस जंगले से लू-सी आती है।"

"मेरा ख्याल है इन्हें जेल एयर कंडीशंड बनानी चाहिए।"

"एक रिक्युजीशन भेजें यहां से जेल मंत्री को?"

मित्तर और जयसिंह खर्राटे ले रहे थे। और कैदी भी आराम कर रहे थे। दिन से इस समय बैरक प्रायः खामोस रहती थी।

कोई तीन-साढ़े तीन बजे फाटक दुबारा खुला, फिर गिनती परेड हुई। आज दोनों बैरकों की गिनती अलग-अलग हुई।

साबुन बंटा। कपड़ा धोने वाले साबुन की पतली-पतली टिकिया थीं। बहुत सस्ते किस्म का था कोई।

"यह क्यों बंट रहा है?" प्रभात ने पूछा।

"इतवार इतवार को बंटता है। कपड़े धोने के लिए।" कैदी ने बताया।

"हमें नहीं चाहिए।" प्रभात ने कहा।

"ले लीजिए किसी कैदी को दे दीजिएगा।" राइटर ने हमसे कहा।

"हमने साबुन ले लिया।"

साबुन बंटवाने के पश्चात् जमादार पीपल के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठ गया। अपना डंडा, जो वह सदा अपने साथ रखता था, उसने चबूतरे के सहारे खड़ा कर दिया।

"मिलाई वाले लोग अलग हो जाएं।" राइटर ने चिल्लाकर कहा।

धीरे-धीरे करके जो लोग आज मुलाकात पर गए थे अलग लाइन में बैठ गए।

"जोड़े से, जोड़े से।" राइटर ने एक कैदी की पीठ पर हल्के से संटी जमाई।

हम लोग भी उठकर खड़े हो गए।

"आप लोग वहीं बैठे रहिए।"

मिलाई वाले लोग अलग हो गए। उनकी गिनती हुई। कुल सत्तावन थे।

"चलो एक-एक करके चलते जाओ।" कैदी उठ-उठकर जमादार को रुपए देने लगे।

"मेरा, नत्थू और रफीक का, एक ने कहा। कैदी पीछे एक-एक रुपया" दे रहे थे।

जमादार रुपए देने वाले कैदियों से घिर गया था।

"एक-एक करके चलो। तुम हटो।" राइटर रुपए दे चुकने वाले कैदियों को अलग करता जा रहा था।

"धत्त तेरे की।" पीपल पर बैठे एक गिद्ध ने जमादार की कमीज पर बीट कर दी। वह उठकर गिद्ध को गाली देने लगा और ढेले से उन्हें उड़ाने लगा।

जब सब कैदी रुपए दे चुके तब भी आठ-दस बच रहे।

"क्यों? निकालो जल्दी। डंडे खाना है क्या?" राइटर ने उनसे कहा।

"मैं अगले इतवार को दे दूंगा।" एक कैदी ने कहा।

जमादार उठकर टहलने लगा था। एक-एक कैदी को वह गौर से देख रहा था। रमेश भी उन्ही मे था। उसके पास जाकर जमादार रुक गया।

"निकाल साले।" उसने कहा।

"नही है मेरे पास।" वह दृढता से बोला।

"नही है!" उसने उसकी पीठ पर एक डंडा जमाया। रमेश डंडे को बचाने के लिए एक ओर झुका तो गिर पडा। जमादार ने एक और डंडा उसके जड दिया।

वह उठकर खडा हो गया।

"निकालता क्यो नही?" राइटर ने उससे कहा।

"यह साला ऐसे नही निकालेगा।" जमादार ने उसकी टागो पर एक और डडा मारा।

दो कैदियो ने जो अभी तक खामोश बैठे थे, उठकर जमादार को एक एक रुपया दे दिया और उस पक्ति से अलग हो गए।

"देगा, देगा।" राइटर ने जमादार से कहा और रमेश को एक ओर ले जाकर समझाने लगा। कई मिनट तक वह उसे समझाता रहा। परन्तु रमेश ने रुपया नही दिया।

जमादार दूसरे कैदियों से वसूलने लगा था। किसी ने बारह आने किसी ने आठ ही आने दिए और कहा बाकी अगले इतवार को दे देंगे।

उनसे पैसे लेने के बाद जमादार फिर रमेश की और बढ़ा।

"निकाल बे, क्यो शामत आई है?" राइटर ने रमेश को समझाया।

"यह साला ऐसे नही निकालेगा।" जमादार ने कहा और डडे से उसे मारने लगा। दो-एक डडे तो उसने आसानी से खा लिए। तब गाली बकने लगा। जमादार को गुस्सा आ गया और वह उसे गिरा के लात घूसे से मारने लगा।

"यह तो सारासर अन्याय है।" मित्तर ने कहा।

"तुम्हारे पास रुपया है?" मैंने पूछा।

"नहीं।"

"तो तुम भी अन्याय का विरोध करना।"

"दिस इज रियली क्रुएल।" प्रभात ने कहा।

राइटर हमलोगों के पास आ गया था

"यह उसको क्यों मार रहा है? क्या मारने से पैसे मिल जाएंगे?" मैंने उससे पूछा।

अरे आप जानते नहीं यह साला बड़ा मक्कार है। पिछली मिलाई पर भी नहीं दिया था।

"लेकिन इस तरह पैसे लेने की इजाजत है क्या इन लोगों को?"

"इजाजत तो पैसा अंदर लाने की भी नहीं है। यह तो फिर जेल है।"

"हम लोग भी अगर न दें।"

"आप से मांगा कहां जा रहा है?" इन लोगों को आप जानते नहीं इन पर इतनी सख्ती न हो तो यह जेल को सिर पर उठा लें।

जमादार उसे मारते शायद थक गया था। लौटकर वह फिर पीपल के चबूतरे पर आ गया और बीड़ी सुलगा कर पीने लगा। साथ में उसे गालियां भी देता जा रहा था। उसकी सांस कुछ बुढ़ापे और कुछ गुस्से के कारण बेतहाशा फूल रही थी।

"कल से साले लगाऊंगा तुझको घर्रे पर मादर···।

रमेश चुप हो गया था और कमीज की आस्तीन से नाक पोंछ रहा था। तभी खाना आ गया। सब कैदी खाना लेने के लिए उधर बढ़ गए जमादार बैरक से बाहर चला गया। रमेश चुपचाप चबूतरे पर बैठ गया और जमादार को गालियां देने लगा। उसके पैर में एक जगह से खून निकल आया था। मुंह से थूक निकालकर वह उस पर लगने लगा।

मैं उसके पास चला गया। उसने मेरी ओर नहीं देखा। अपनी रौ में गालियां बकता रहा। तब पाजामा का नेफा टटोलने लगा। फिर जहां उसे पीटा गया था वहां जाकर इधर-उधर जमीन पर कुछ ढूंढ़ने लगा। उसकी बीड़ी खो गई थी। पता नहीं वहीं या दूसरी अधजली बीड़ी लेकर वह वापस चबूतरे पर आ गया और मुझसे माचिस लेकर बीड़ीं सुलगा कर पीने लगा।

"क्यों इस तरह करते हो।" मैंने कहा।

"इस साले को नौकरी से न निकालवाया तो मां का दूध नहीं पिया।"

उसने कहा।

प्रभात ने मुझे बुला लिया और उससे बात करने के लिए मना करने लगा।

"क्यों ?" मैंने कहा।

"ठीक नहीं है। बिला वजह क्या फायदा झंझट मोल लेने से।" उसने कहा।

मैं चुप हो गया।

हम लोग भी अपना खाना लेने चले आए। रमेश ने खाना नहीं लिया तभी मैंने देखा वह पीपल पर चढ रहा था। आधी दूर वह चढ़ गया था तभी लगभग मेरे देखने के साथ ही साथ राइटर ने भी उसे पेड पर चढ़ते देख लिया। वह लपककर आया।

"अरे क्यो जान देना चाहता है? चुपचाप उतर आ, नही तो वह मार पड़ेगी कि छठी का दूध याद आएगा।" राइटर ने कहा।

"अब तो जब डी० आई० जी० आएंगे तभी उतरूंगा।" वह और ऊपर चढ़ता हुआ बोला।

सारे कैदी उसे देखने लगे थे। दो-एक कैदियों ने भी उसे समझाया। परंतु उसने किसी की बात नही सुनी। आराम से एक मोटी टहनी का सहारा लेकर पेड पर अधलेटा हो गया।

किसी ने शायद जमादार को खबर कर दी थी या शायद वह अपने आप गया था। एक अजीब शोरगुल सारे अहाते में मच रहा था।

"चलो सब अपनी-अपनी बैरक में।" जमादार ने कहा।

सब अपनी-अपनी बैरक में आ गए।

"चलो, चुपचाप नीचे उतर आओ।" जमादार ने बहुत ही नर्मी से रमेश से कहा।

रमेश ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"अगर जेलर साहब को पता चल गया तो गोली से उड़ा देगा। आओ देर हो रही है बैरक बंद करने में।"

रमेश ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया।

"उतर आ भइया अब नहीं मारूंगा कभी। बस।"

कोई उत्तर नहीं।

"उतर आ भाई हाथ जोड़ता हूं तेरे।" जमादार वाकई हाथ जोड़ने लगा।

हम सब बैरक में खड़े जंगले से तमाशा देख रहे थे।

शाम होने लगी थी। पीपल पर पक्षियों का कोलाहल शुरू हो गया था। जहां पक्षी उस पर बसेरा लेते रमेश टहनी हिला देता और सब फिर शोरगुल करके उड़ जाते।

"अभी उतर आ कुछ नहीं होगा। मैं कह दूंगा मैंने चढ़ाया था कौए उड़ाने के लिए।"

रमेश ने नीचे थूक दिया। जो जमादार के पांव के पास आकर गिरा।

"अरे थूक, चाहे मूत, मगर नीचे तो उतर आ।"

राइटर भी बाहर खड़ा था। "रमेश उतर आओ नीचे। बस, बहुत हो गया। कोई नही कहेगा कुछ अब।" उसने कहा।

"जब तक इस साले की जमादारी नहीं छिनेगी, मैं नहीं उतर सकता।" पहली बार उसने कुछ कहा।

"जाओ, तुम जाओ यहां से।" राइटर ने जमादार से कहा। जमादार वहां से हट गया।

"आओ, नीचे उतर आओ। मैंने कह दिया इससे। अब नही आएगा यहां। कल से तो वैसे ही उसकी बदली हो रही है दूसरी बैरक में।"

अंधेरा बढ़ने लगा था। जमादर काफी चिंतित हो रहा था।

"देखो, उतर आओ। आखिरी बार कह रहा हूं। नहीं तो जेलर साहब से कहना पड़ेगा। मेरी जमादारी जाए चाहे न जाए मगर तेरी खाल खिंच जाएगी। यह समझ ले।" जमादार ने कहा।

रमेश ने कोई उत्तर नहीं दिया।

जमादार एक मिनट खड़ा रहा। तब उसने अपनी टोपी उतारकर चबूतरे पर रख दी। बोला, "तेरे पैर छूता हूं मेरे बाप। अब तो उतर आ।"

वह ऊपर से पेशाब करने लगा। जमादार तुरंत हट गया वहां से।

"अच्छा साले तेरी मौत ही आई है, तो ठीक है।"

उसने गेट वाले नंबरदार से कुछ कहा और गेट पर खड़ा हो गया।

थोडी देर मे डिप्टी जेलर आ गया, साथ में दो कांस्टेबुल भी थे।

"कौन है ?" उसने आकर पूछा।

रमेश ने कोई उत्तर नही दिया।

"क्या हुआ बोलता क्यों नही भाई ?"

"बहुत नालायक है यह हजूर।" जमादार ने कहा।

"नालायक के बच्चे।" उसने जमादार के एक जोर की चपत लगाई, "तू जाकर बैरक बद करवा।"

जमादार ने चटपट अदर जाकर गिनती करवाई। और बैरको मे ताला लगवा दिया।

सब कैदी जंगलो के पास जमा हो गए थे। थोडी देर मे एक सिपाही पेट्रोमैक्स लेकर आ गया। पेड मे थोडी दूर पर पेट्रोमैक्स जमीन पर रख दी गई। जेलर भी आ गया।

"कौन है ? रमेश ? अच्छा, तीन सौ सत्रह वाला।" उसने कहा, "क्या हो गया। रमेश, आओ बेटा, नीचे उतर आओ। यहा आकर बताओ क्या बात है ? क्या तकलीफ है तुमको ?"

जेलर काफी देर तक समझाता रहा।

"देखो उतर आओ सुपरिंटेंडेंट को अभी खबर नही भेजी है। उनको पता चल जाएगा, तो आफत आ जाएगी।"

"नही उतरेगा ?" डिप्टी जेलर जरा सख्ती मे बोला, "रामसिह चढ के साले को ढकेल दो वहा से।"

"खबरदार कोई ऊपर चढा तो मैं यही से फांद पडूगा।" रमेश ने कहा।

"फांद क्या पडेगा, साला, चढो रामसिह, खीच लो साले की टांग पकड के।"

रामसिह बूट उतारने लगा।

"मैं फांदता हूं।

"हट जाओ रामसिह।" जेलर ने कहा, "जाओ सुपरिंटेंडेंट को खबर करवा दो।" फिर वह रमेश मे बोला, "बात क्या हुई थी, यह तो बता कुछ मेरे भाई।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया तो जेलर हम लोगों की बैरक के पास आया।

"क्या बात हुई थी ?" उसने राइटर से पूछा।

"कुछ नहीं। आपस में गाली-गलौज कर रहा था, वहीं जमादार साहब ने एक डंडा मार दिया।"

"क्यों बे तूने मारा क्यों उसे।" जेलर ने जमादार के एक झापड़ दिया। उसकी टोपी जमीन पर गिर गई।

"अच्छा अब तो उतर आ, अभी सुपरिंटेंडेंट के घर तक नहीं पहुंचा होगा चपरासी।"

"मैं उतर नहीं सकता। पचासा डंडों से कम नहीं मारे हैं इस साले जमादार ने।"

जमादार को 'साले' कहने पर जेलर हंसा, "अबे गाली दिए जा रहा है मेरे सामने। मार तो दिया एक झापड़ उसके। सुबह पेशी हो जाएगी उसकी। अब उतर तो आ।"

"मैं उतरूंगा नहीं जब तक कि डी० आई जी० नही आएंगे। सबसे एक-एक रुपया वसूला है साले ने।"

"किससे वसूला है ?"

"मिलाई वालों से। मेरे पास था नहीं तो मुझे मारा है डंडों से। तैंतालिस डंडे मारे हैं साले ने। मैं गिन रहा था।"

"अच्छा नीचे उतर आओ। चलो अभी डाक्टरी करवाकर दवा लगवा देता हूं। अस्पताल में दूध का भी प्रबंध करवा दूंगा।"

"उतरूंगा नहीं मैं जब तक डी० आई० जी० नही आ जाएंगे।"

"डी० आई० जी० ! तुझको खबर भी है कुछ ? डी० आई० जी० आजकल नैनीताल में हैं।"

"चाहे जब आएं। मैं यहीं बना रहूंगा।"

बैरक के लोग उसकी बातों पर हंस रहे थे।

"उतर आ मेरे भाई नहीं तो सुपरिंटेंडेंट आ जाएंगे तो फिर मैं नहीं जानता।"

"आप आराम कीजिए जाकर।"

तभी सुपरिंटेंडेंट आ गया। साथ में एक कांस्टेबुल भी था, बंदूक लिए हुए। एक और कांस्टेबुल के हाथ में एक बड़ी-सी टार्च थी।

सुपरिंटेंडेंट पेड़ के पास आकर रुक गया, "कहां है ? टार्च दिखाओ", उसने कहा। टार्च का प्रकाश काफी तेज था। वह साफ-साफ पेड़ पर दिखाई दे रहा था। काफी ऊंचे चढ़ गया था, "गिरधारी निशाना लगाओ। मारो साले की टांग में।" सुपरिंटेंडेंट ने कहा।

"मैं फांद पड़ूंगा नीचे।"

"नीचे ही बुलाने का इंतजाम कर रहा हूं। क्या हुआ, क्यों चढा ऊपर ?"

"सैतालिस डंडे मारे है मुझे जमादार ने। मुझसे रुपया मांग रहा था। जब मेरे घर वाले नहीं दे गए तो मैं कहां से दूं।"

"क्यों ठीक कह रहा है यह ?" उसने जमादर से पूछा।

"हुजूर···।"

"हुजूर के बच्चे। कितने रुपये जमा किए आज ?"

"सरकार···।"

उसने कांस्टेबुल से हंटर लेकर उसके तडातड आठ-दस जड़ दिए, "ले जाकर बंद कर दो इसे।" उसने डिप्टी जेलर से कहा।

डिप्टी जेलर उसे लेकर चला गया।

"अब उतर नीचे। उल्लू के पट्ठे।"

"डी० आई० जी० के बिना आए···।"

"डी० आई० जी० के बच्चे, मैं कहता हूं नीचे उतर।" सुपरिंटेंडेंट इतनी जोर से गरजा कि मैं समझा वह अपने-आप नीचे टपक पड़ेगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ।

"गिरधारी उठाओ बंदूक। एक-दो···।"

जेलर ने उससे कुछ कहा।

"ठीक है।" वह खामोश हो गया।

थोड़ी देर मे एक बड़े बांस में एक मशाल बांधकर लाई गई। मशाल जलाकर बांस उसकी ओर बढ़ाया गया।

धीरे-धीरे कर वह नीचे उतरने लगा।

"उतर रहा हूं।"

जब वह जमीन से आठ-दस फुट रह गया तो सुपरिंटेंडेंट ने कांस्टेबुल से कहा, "खींच लो साले की टांग पकड़कर।" उसने वाकई टांग पकड़कर

खींच लिया।

"ले चलो साले को।"

सब उसे लेकर चले गए। फाटक में ताला लगा दिया गया।

थोड़ी देर बैरक में कुछ गुलगपाड़ा रहा। फिर सब शांत हो गए।

राइटर ने तुरंत सबके चूल्हे आदि हटवा दिए और गिरहकटों की टोली को कह दिया कि आज ताश नही खेलें, कोई ठीक नही रात में राउंड हो जाए। वे मान गए। बाबाजी का कीर्तन और गाना-बजाना फिर भी चलता रहा।

"बाबू जी एक सिगरेट हो तो दीजिए।" गिरहकटो की टोली के एक कैदी ने आकर मुझसे कहा।

मैंने सिगरेट दे दी।

"अमलियन मे चरस लगाएंगे। आप मूतेंगे ?" उसने कहा।

"नही।" मैंने कहा।

रामपति गाना गा रहा था। मित्तर शांति मे पैर दबवा रहा था।

राइटर देर तक बैठा गप मारता रहा। कैदियों के इस तरह पेड पर चढने के अन्य किस्से सुनाना रहा। एक बार आगरा जेल मे एक सुपरिंटेंडेंट ने एक कैदी को शूट करवा दिया था, उसने बताया। दिखा दिया कि भाग रहा था। यहां जेल में बस गिनती होती है, उसने कहा। जिंदा हो चाहे मुर्दा। गिनती में पूरा पड़ जाए बस।

न जाने कैसे नेहरूजी की बात वह बीच में ले आया और बताने लगा कि इसी प्रकार एक बार नेहरूजी के सामने कुछ कैदी बैरकों की छत पर चढ़ गए थे। कोई शिकायत रही होगी। खाने-पीने में या कुछ और। नेहरूजी भी वही बंद थे। जेलर, सुपरिंटेंडेंट ने बहुत समझाया। मगर वे नहीं उतरे तो कुछ लोग नेहरूजी के पास जाकर बोले, आप समझाइए चलकर। वह आए। बहुत गुस्सा हुए। उनसे नीचे उतरने को कहा। मगर वे नहीं माने। तो नेहरूजी ने कहा गोली चला दो। डिसिप्लिन के मामले में नेहरूजी बहुत सख्त थे, उसने कहा।

मुझे लगा इस व्यक्ति को जेल मिनिस्टर होना चाहिए। जेल के बारे में जितना जानकारी उसे थी, शायद जेलर को भी नही थी।

दूसरे दिन प्रार्थना आदि होने के कुछ ही देर बाद हमें आर्डर मिला कि हम दो नंबर बैरक मे चले जाएं। राइटर ने हमे यह सूचना दी तो उसका चेहरा उदास हो आया। "याद रखिएगा हमे", उसने कहा।

"जरूर, जरूर देखिए मौका लगा तो आपसे भेंट करते रहेंगे।" हमने कहा।

"अस्पताल आ जाया कीजिएगा। वही मुलाकात हो जाया करेगी। शाम को वहा आने की मनाही नही है।" उसने बताया।

हम अपना सामान लेकर चलने लगे, तो और कैदियो ने हमे घेर लिया। इन दो-ढाई दिनो मे ही खासा लगाव उन्हे हममे हो गया था। कुछ ने हाथ जोडकर हमे नमस्ते भी की और अहाते के फाटक तक हमे छोडने आए।

जेलर चक्कर मे कुर्सी डाले बैठा था। उसने हमे बुलाया। कहा, "अब तो आप लोग खुश है। देखिए सुपरिंटेंडेंट की आज्ञा बिना ही आप लोगों को ट्रासफर कर दिया है। ठीक से रहिएगा।"

"ठीक मे नही रहेगे तो कहा जाएंगे। भागने की कोई गुंजाइश है नही यहा मे।" मैंने कहा।

"हा, पेड-वेड़ पर न चढिएगा।" उसने मजाक किया।

"क्या हुआ उसका ?" मैंने पूछा।

"क्या कीजिएगा जानकर! यह जेल है। अपने काम से काम रखिए।"

"हमारे और साथी ?"

"वह भी वही आ जाएंगे।"

हम उसे धन्यवाद देकर चले आए। दो नंबर बैरक मे हमारा काफी गर्मजोशी से स्वागत हुआ। रशीद और गौतम वहा पहले ही पहुंच चुके थे। गन्ना कामदार संघ के सारे लोग हमारे चारों ओर घिर आए और हमारा हालचाल पूछने लगे। पहले दिन हमारे वहां से हटाए जाने वाली

घटना पर सबने खेद प्रकट किया और जेल अधिकारियों को बुरा-भला भी कहा। हमें पता लगा कि इन्हीं लोगों ने विश्वनाथ सिंह से हम लोगों के बारे में बतलाया था।

यहां आकर हमने अपने को काफी स्वतंत्र अनुभव किया। यद्यपि अब भी हम लोगों की वही स्थिति थी। हाते के गेट पर चौकीदार खड़ा रहता और बिना आज्ञा हम बाहर नहीं जा सकते थे। हां, इतना जरूर था कि यहां दिन में बैरक में ताला नहीं पड़ता था। न गिनती परेड आदि ही होती थी और रात में बाहर मैदान में सोने की इजाजत थी।

थोड़ी देर में एक बड़ी सी बाल्टी में चाय आ गई। सब लोगों ने चाय पी। पता लगा, चाय विश्वनाथ सिंह की बैरक से आती है। खाना भी इस बैरक का विश्वनाथ सिंह की बैरक में बनता था। वे लोग जेल अधिकारियों से सारा राशन ले लेते थे और स्वयं उसे पकवाते थे।

गन्ना कामदार संघ के सदस्यों और हम लोगों के अलावा इस बैरक में छह व्यक्ति उझानी सूती मिल के भी थे। हम लोग कुल मिलाकर छप्पन आदमी थे जबकि साठ लोगों के लिए बैरक में स्थान था।

चार कैदी यहां मिले हुए थे जो प्रात: आकर सारी बैरक को धोते थे। फिर सब लोगों के नहाने के लिए पानी भरते। शाम पांच बजे वे वापस चले जाते।

हम जब यहां आए थे तो बैरक धुल रही थी। बैरक धुल चुकने के पश्चात् हम लोगों ने मल-मलकर स्नान किया। कपड़े धोकर पेड़ों के तनों पर टांग दिए और कुछ देर वहीं बाहर मैदान में टहलते रहे।

तभी हमारी मिलाई की परची आ गई। केवल मेरा, प्रभात और गौतम का नाम था। हम लोग नंबरदार के साथ चले गए। उसी प्रकार चक्कर में दुबारा नई परची बनी और गैलरी से होते हुए हमें उस स्थान पर ले जाया गया, जहां मिलने वालों से भेंट होती थी।

गैलरी से निकलते समय फांसी के कैदियों वाली बैरक में मैंने देखा वह कैदी आज भी उसी प्रकार फाटक के सींखचे पकड़े खड़ा था।

आज मिलाई वाले स्थान पर कोई भीड़ नहीं थी। केवल विश्वनाथ सिंह और उनके कुछ आदमी मैदान में खड़े आपस में बातें कर रहे थे।

विश्वनाथ सिंह ने अपने स्थान पर खड़े-खड़े मुस्कराकर हम लोगों का स्वागत किया।

मिलने आए लोगों में हमारे यूनियन के कुछ मेंबर थे। हमारा वकील और गौतम का छोटा भाई था।

वे लोग हमारे लिए कुछ खाने-पीने का सामान, अखबार और सिगरेट आदि लाए थे।

वर्मा से कहकर हमने अपने शेष साथियों को भी बुलवा लिया।

मिलने आने वाले लोगों ने हमें सूचना दी कि आज कोर्ट में हम लोगों की बेल एपलीकेशनें मूव कर दी जाएगी। संभवतः गुप्ता और विजय भी आज कोर्ट में सरेंडर कर देंगे। उन लोगों के बारे में हमने अधिक जानना चाहा परंतु कोई हमें उनके बारे में खास सूचना नही दे सका। केवल इतना पता चला कि वे लोग अपने घरों में नहीं हैं। सी०आई०डी० के लोग उनके घरों के चक्कर काट रहे हैं।

"हम लोगों की जमानत आज हो जाएगी ?" मित्तर ने वकील से पूछा।

"यहां से होना मुश्किल है।" वकील ने बतलाया, "शायद सेशन से हो। उसमें कुछ दिन लग सकते हैं। मौज से रहो। परेशानी क्या है यहां ! आज बी० क्लास के लिए एप्लीकेशन दे दी जाएगी। बी० क्लास मिल जाएगा फिर जेल छोड़ने का नाम नहीं लेंगे।"

थोड़ी देर बाद विश्वनाथ सिंह भी वहां आ गए।

"कहिए ?" उन्होंने कहा।

हम लोग उठकर खड़े होने लगे।

"बैठे रहिए, बैठे रहिए। खड़े होने की जरूरत नहीं। दो नंबर में आ गए या नहीं ?"

"जी हां, आज सुबह से आ गए हम लोग।"

"अच्छा। और कोई तकलीफ तो नहीं ?"

"जी नहीं। बड़ी मेहरबानी की आपने।"

"मेहरबानी की क्या बात है ?" विश्वनाथ सिंह बिगड़ गए। "कोई किसी के साथ भलाई करता है तो क्या मेहरबानी करता है। सिर्फ अपना

इंसानी फर्ज अदा करता है।"

हम चुप रहे।

"वहां गन्ना कामदार वालों को जरा हौसला दिलाए रहिएगा मैं शाम को आऊंगा।"

"जी अच्छा।"

विश्वनाथ सिंह चले गए।

थोडी देर तक हम लोग वही बैठे बातचीत करते रहे। वकील साहब को कोर्ट जाने की देर हो रही थी। अत: मिलने वाले लोग चले गए हम अपनी बैरक मे लौट आए।

फासी वाला कैदी उसी प्रकार खडा था। एक क्षण रुककर मैंने उसे देखा। वह बिना हिले-डुले दोनो हाथो मे सीखचे पकडे सीधा खडा था।

"इसको फासी की सजा हुई है?" मैने गैलरी के द्वार पर बैठे चौकीदार से पूछा।

"जी हां।" उसने कहा।

"कब होगी फांसी?"

"पता नही। आप लोग अंदर जाइए।"

हम चले गए।

"राइटर तो बता रहा था हफ्ते मे एक बार मुलाकात होती है।" मित्तर ने कहा।

"वह डाका-कतल वालों के लिए होगा।" प्रभात ने उत्तर दिया।

"यस योर आनर। यू आर राइट सर।" गौतम बोला।

हम लौटकर आए तब तक बैरक धुल चुकी थी। हम लोगों के कपडे भी जो हम फैला आए थे सूख गए थे। सब लोग बैरक के अंदर लेटे आराम कर रहे थे। हम भी अपने कपड़े उतारकर बैरक के अंदर आ गए। हमारे बिस्तर गन्ना कामदार लोग अंदर ले आए थे। कई चबूतरे यहां खाली पड़े थे। हमने उन पर अपने बिस्तर लगाए और आराम करने लगे।

मित्तर अखबार पढ़ रहा था। अखबार पढते-पढते वह उठकर गन्ना

कामदारों के पास चला गया और उनको खबर पढ़कर सुनाने लगा। शायद उन लोगों के बारे में कोई खबर थी। थोड़ी देर बाद मित्तर लौट आया। उसके साथ गन्ना कामदार संघ का एक आदमी था।

"भाई साहब हम लोगो का परिचय हो जाए।" उसने कहा।

"हां। हा।" मैंने कहा और अपना परिचय देने लगा।

"नहीं, इस तरह नही आप लोग हमारे साथ आइए। पहले अपने साथियों का परिचय करा दू।"

हम लोग उठकर उसके साथ हो लिए। बैरक के बीचोंबीच एक चबूतरे पर खडे होकर उसने सब लोगों को वही बुला लिया और बारी-बारी से सबका परिचय दिया। हमने भी अपना परिचय दिया।

तभी खाना आ गया जिस आदमी ने परिचय का सुझाव रखा था वह उस बैरक का सेक्रेटरी और गन्ना कामदार संघ का प्रादेशिक सचिव था। नाम था नारदमुनि। वही खाना आदि बंटवाने का काम करता था। गोरे रंग का दुबला-पतला आदमी था। गेरवे रंग का कुर्ता और धोती पहनता था। आयु होगी चालीस-बयालीस वर्ष।

खाना बैरक के कोने मे रखवाकर नारदमुनि ने आवाज लगाई, "खाने के लिए बैठ जाएं।"

जिन लोगो को हाथ-मुह धोना था उन्होने हाथ-मुह धोया। जिन्हें नही धोना था वे बिना धोए ही अपने-अपने चबूतरे पर तसले-कटोरी निकालकर बैठ गए।

नारदमुनि ने अपने हाथ से सबको खाना बांटा। रोटी, दाल, चावल और सब्जी। खाना लेकर सब बैठ गए। उझानी मिल के दो आदमियों ने खाना नही लिया। पूछने पर पता चला कि वे खाना नहीं खाते।

"फिर क्या खाते है ?" मैंने पूछा।

"चने वगैरह।"

"क्यों ?"

"बाहर का खाना वे नहीं लेते।" किसी ने बताया।

मुझे आश्चर्य हुआ।

"कितने दिनों से यहां हैं ?"

"आज सोलह-सत्रह दिन हो गए ।"

"बिलकुल खाना नहीं खाते ।"

"चना वगैरह लेते हैं। या फिर फल आदि। अगर कोई दे जाता है तो।"

हम खाना खाकर सिगरेट पीने लगे। मैंने देखा हमारे पास थैले में कुछ खरबूजे शेष थे। मैंने प्रभात से पूछकर दो खरबूजे निकाले और उभानी मिल वाले उन दो व्यक्तियों को दे आया।

"लीजिए पंडित जी।" उनमें से एक से मैंने कहा।

वह पंडित था या नहीं, मुझे नहीं पता। हां, टीका जरूर लगाए था। इसलिए मैंने उसे पंडित कहकर संबोधित किया था।

पंडित जी आंखें बंद किए लेटे थे। तुरंत उठकर बैठ गए, "आइए।" उन्होंने कहा।

खरबूजे मैंने चबूतरे पर रख दिए, "यह आपके लिए हैं।"

"अरे, अरे क्यों कष्ट करते हैं। आप खाइए न।"

"मेरे पास और हैं।"

"अच्छा।" उन्होंने बड़े आदर भाव से खरबूजे रख लिए।

ख्यालीराम—उभानी मिल वर्कर्स यूनियन के सेक्रेटरी—भी अपने चबूतरे पर उठकर बैठ गए और निकट खिसक आए।

"आप लोग यहां वापस आ गए। बड़ी प्रसन्नता हुई। जब से आप लोग उस दिन यहां से गए मुझसे खाना नहीं खाया गया।" उन्होंने कहा।

ख्यालीराम के परमहंस मार्का दाढ़ी थी। बात करते थे तो दांत दिखाई देते थे। चेहरे पर एक विचित्र प्रकार का वैराग्य झलकता था।

शाम को पानी का छिड़काव होने के बाद हमने अपने-अपने बिस्तर बाहर जमीन पर लगा लिए। तसले और कटोरों को बिस्तर के नीचे रखकर हम उनसे तकिए का काम लेते थे। इसके पीछे उनकी सुरक्षा का भी एक विचार था। हमें बताया गया था कि हमें दी हुई किसी भी वस्तु के खोने

पर हमसे उसकी कीमत वसूल की जाएगी। मित्तर का कहना था कि हमें मार भी पड सकती है।

बिस्तर लगाकर लोग अलग-अलग गोलों मे बटकर आराम करने लगे। कुछ लोग कान मे जनेऊ चढाकर तसले मे पानी लेकर लैट्रीन की ओर चल दिए। एक-दो लोगो ने स्नान भी किया।

तभी हमने देखा, कैदियो की एक अच्छी-खासी कतार बैरक मे दाखिल हुई। वे सब अपने-अपने कबल, तसले, कटोरे, घडे आदि अपने साथ लिए थे। कुछ बेडिया पहने थे। उनकी शक्लें उन कैदियों से कोई विशेष भिन्न नही थी जिनके बीच हम दो-तीन दिन रह आए थे। वे सबके सब उस बैरक मे दाखिल हो गए जिसे हम अभी-अभी खाली करके आए थे।

गन्ना कामदार सघ के लोगो से हमे पता चला कि असल मे वे सब ही उस बैरक के कैदी हैं। परतु आजकल जेल मे स्थान की कमी होने के कारण उन्हे प्रातः ही वहा से हटाकर किसी और बैरक मे भेज दिया जाता है। शाम को उन्हें वापस ले जाया जाता है। रात वही रहते है। सुबह बैरक हम लोगो के लिए खाली कर दी जाती है।

कैदियो के बैरक के अदर आते ही उनकी गिनती परेड हुई और जमादार बैरक मे बाहर से ताला बद करके चला गया। थोडी देर बैरक मे कुछ हलचल रही। सब कैदियो ने चबूतरे पर अपने-अपने बिस्तर लगाए और फिर टोलियो मे बटकर ताश, पत्ता, चिलम-गाजा, गाना-बजाना आदि करने लगे।

बडे-बडे बर्तनो मे हमारे लिए खाना आया। हम सब गन्ना कामदार सघ के लोग और उभानी मिल के व्यक्ति लाइन में खाना लेने बैठ गए। इस समय लौकी की तरकारी, दाल और रोटी बनी थी। नारदमुनि ने ही खाना परोसा। खाना खाकर हमने अपने-अपने बर्तन धोए। जो बीड़ी-सिगरेट पीते थे वे बीडी-सिगरेट पीने लगे।

गन्ना कामदार संघ वालों ने अपने बिस्तरों को मिला कर एक काफी बडी जगह घेर ली और एक वृत्त बनाकर बैठ गए। उन्होंने हमें भी

आमंत्रित किया। सब लोगों के वहां जमा होने के पश्चात् वहां भजन आदि होने लगे। मित्तर अपने-आप सभा का संचालक बन गया। किसी ने भजन, किसी ने गीत तो किसी ने गजल सुनाई। इसके बाद लोगों के भाषण हुए। सबने अपनी-अपनी यूनियन की समस्याओं तथा चल रहे अपने आंदोलनो के बारे मे बताया।

बाहर यह हो रहा था उधर बैरक के अंदर भी गाना-बजाना चल रहा था।

अचानक मुझे कोई परिचित-सा स्वर सुनाई पडा।

'हरिनी रोये-गेये पूछे न।'

दौरे वाला कैदी आज इस बैरक में आ गया था।

कुछ कैदी बैरक के दरवाजे के पास सीखचो से लगे बैठे हमारे कार्यक्रम को देख रहे थे। बीच-बीच मे आवाज लगती एक सौ तीन हवालाती बंद, ताला, जंगला, बत्ती ठीक, दो नंबर। आवाज लगाकर नंबरदार फिर जंगले पर आकर खड़ा हो जाता और हम लोगों का कार्यक्रम देखने लगता। मैंने गौर किया वह तभी आवाज लगाता जब एक चौकीदार हाथ में घडी-सी कोई वस्तु लिए बैरक की बगल में गुजरता। वह बैरक के दरवाजे पर रुककर दीवाल मे बने किसी सूराख मे हाथ डालता और उससे कोई चीज निकालकर हाथ मे ली हुई घडी में कुछ करता, फिर चुपचाप चला जाता। करीब-करीब हर आध घंटे के बाद वह लौट आता और बड़े ही तटस्थ भाव से चलकर बैरक के दरवाजे पर रुककर घड़ी मे चाभी-सी भरता और फिर चुपचाप चल देता। उसके आते ही नंबरदार जंगलों से हटकर कुछ देर यों ही बैरक मे चलकर एक-दो-तीन गिनता तब अचानक चिल्ला उठता, 'एक सौ तीन हवालाती बंद···।'

चौकीदार के चले जाने के बाद मैंने पता लगाया कि उसकी डियूटी घूम-घूमकर पहरा देने की है तथा बैरक की दीवार मे बने सूराख में एक चाभी रहती है, जिसे अपनी घड़ी में लगाकर घुमाता है, इससे घड़ी में टाइम रिकार्ड हो जाता है कि वह कितने बजे वहां था।

इस बार जब वह आया तो मैंने उठकर उसे ऐसा करते देखा।

कोई बारह बजे तक हम लोगों का गाना-बजाना चलता रहा। लोग

ऊंघने लगे। कुछ उठकर सोने चले गए। आखिर सभा विसर्जित कर दी गई और सब आकर अपने-अपने बिस्तरों पर लेट गए।

मुझे नींद नहीं आ रही थी। प्रभात भी जाग रहा था। मैंने उससे उठकर टहलने का प्रस्ताव रखा। वह राजी हो गया और हम उठकर बैरक के अहाते में टहलने लगे। बगल में एक और बैरक थी। बीच में काफी खुला मैदान था। हम टहलते-टहलते दूसरी बैरक की ओर निकल गए। वहां खिड़की पर कोई दो आदमी खड़े अंदर किसी कैदी से बातें कर रहे थे। हम निकट गए तो देखा गौतम और रशीद थे।

"यहां क्या कर रहे हो ?" मैंने पूछा।

"नबी साहब से जरा बातें कर रहा था।" गौतम ने कहा। वह और रशीद पिछले दिनों इसी बैरक मे कैद थे।

नबी के बारे में उन्होंने हमें दिन में बताया था कि उसके घोड़े रेस मे दौडते थे। कत्ल के इलजाम में वह बंद था।

गौतम ने नबी से हमारा भी परिचय कराया।

नबी खासा जवान व्यक्ति था। क्लीन शेव्ड। कीमती स्लीपिंग सूट पहने वह अपने चबूतरे पर बैठा था। बड़े अदब से उसने हमें सलाम किया और जंगले के अंदर से हमें सिगरेट पीने को दी। हमने सिगरेट ले ली। उसने जंगले से बाहर हाथ निकालकर हमारी सिगरेट जलवाई। खुद भी एक जलाकर अंदर चबूतरे पर बैठकर पीने लगा। उसने अपने दो और साथियों, हैदर और अनीस से भी हमारा परिचय कराया। अनीस नबी के घोड़ों का जाकी था। हैदर मियां अस्तबल के इंचार्ज थे।

"बिलकुल बेकसूर फंस गए बेचारे।" गौतम ने हमसे कहा।

हमने अफसोस जाहिर किया। हालांकि दिन में गौतम ने हमें बताया था कि नबी ने हत्या की थी और उसके खिलाफ पक्के प्रमाण थे। वह स्वयं पहले किसी नवाब साहब का जाकी था। बाद में नवाब साहब की मृत्यु के बाद उनकी बेगम से विवाह कर लिया था। इश्क नवाब साहब के जीवन काल से ही चल रहा था। सारी जमीन, जायदाद, घोड़े, अस्तबल, अपने नाम करा लेने के बाद उसने बेगम की हत्या कर दी थी क्योंकि अब वह किसी और लड़की से शादी करना चाहता था और बेगम उसके रास्ते में

आ रही थी।

देर तक वहां खड़े हम नबी से बात करते रहे। जंगलों की सलाखों को पकड़े खड़े-खड़े हमारे हाथ दुखने से लगे। बैरक के अंदर सारे कैदी सोने लगे थे। केवल नंबरदार सोते से उठकर आवाज लगा रहा था और बीच मे एक बार नबी के पास अपनी बीड़ी जलाने के लिए माचिस मांगने आया था। नबी ने हमसे चाय के लिए पूछा, "पीजिए तो अभी बनवाऊं?" उसने कहा।

"नही, रहने दीजिए। काफी देर हो गई।" हमने कहा और उससे क्षमा लेकर चले आए।

"सुबह की चाय हमारे साथ पीजिए।" उसने कहा, "सुबह-सुबह पाच बजे ही बैरक खुल जाती है। आपको बेड टी पिलाऊंगा।"

लौटकर हम अपने बिस्तरों पर लेट गए। लगभग सभी सो रहे थे। अचानक हमारे कान मे किसी स्त्री के गाने की आवाज पड़ी। आवाज बैरक की दीवाल के पार से आ रही थी।

"यह जनानी आवाज कहां से आ रही है?" मैने गौतम से पूछा।

"यू डोंट नो सर। इसके परली तरफ औरतों की बैरक है। अभी क्या, थोड़ी देर मे सुनिएगा। रात-भर रौनक रहती है। योर आनर।" उसने बताया।

गाना सुनते-सुनते मुझे नीद आ गई। मुश्किल से आधा घंटा मुझे सोए हुआ होगा कि अचानक बहुत जोरों से शोरगुल सुनकर में जाग पड़ा। और लोग भी जाग गए। एक मिनट हमे समझने में लगा कि शोर कहां से आ रहा है। बैरक के अंदर काफी हलचल मची थी जैसे सभी कैदी मिलकर एक साथ चिल्ला रहे हों। हमने देखा, सब अपने-अपने चबूतरों से उठकर खड़े हो गए थे। किस बात का शोर था जल्दी हमारी समझ में नही आया।

बाहर भी अब तक सब लोग जाग गए थे। जंगले के करीब आकर हमने देखा, दो कैदी आपस में लड़ रहे थे। वे बुरी तरह एक-दूसरे से गुथे हुए थे। उनमें से एक के पांव में बेड़ियां पड़ी थी। वही दौरे पर रहने वाला कैदी था। देखते-देखते उसने दूसरे कैदी की गर्दन अपनी बेड़ियों के बीच

म फसा ली। अब तक बाहर भी काफी शोर होने लगा था और गन्ना कामदार सघ के कुछ लोग 'छोडो' 'बचाओ' की आवाज लगाने लगे थे। परतु अन्य कैदी शोरगुल मचाने के अलावा कुछ नही कर रहे थे।

कुछ देर मे बेडियो वाला कैदी अलग हुआ तो हमने देखा, दूसरा कैदी जमीन पर लुढक गया था। जबान बाहर निकल आई थी। आखे पथरा गई थी।

अचानक सारी बैरक मे और बाहर सन्नाटा छा गया। एकदम शात। बेडियो वाला कैदी पसीने-पसीने होकर एक चबूतरे पर बैठ गया था। उसकी बेडिया टेढी हो गई थी। वह बुरी तरह हाफ रहा था।

अन्य कैदी भी अपने-अपने चबूतरो पर सिमट आए थे। मरे हुए कैदी की लाश फर्श पर पडी थी।

बेडियो वाला कैदी काफी देर तक चबूतरे पर बैठा हाफता रहा। फिर वह अचानक उठकर खडा हो गया। सब कैदी दीवाल की ओर सिमट आए। देर तक वैसे ही खडा रहा। तब बैरक के सिरे की ओर बनी सडास मे जाकर उसने पेशाब किया। लौटकर एक घडा उठाकर उसका सारा पानी उसने अपने सिर पर उडेल लिया और खाली घडा मरे हुए कैदी के सिर पर पटककर चुपचाप अपने चबूतरे पर लेट गया। नारदमुनि ने इशारे से हम लोगो को अपने-अपने बिस्तरो पर लौट आने को कहा। हम चुपचाप वहा से हटकर अपने बिस्तरो पर आ गए। हम सब बुरी तरह डर गए थे। तभी अहाते के गेट पर पेट्रोमैक्स का उजाला दिखाई दिया। सुपरिटेंडेंट, जेलर, डिप्टी जेलर, डाक्टर तथा अन्य अधिकारी गेट के अदर प्रविष्ट हुए। साथ मे कई सिपाही भी थे। बदूकें लिए हुए। हम लोग अपने-अपने बिस्तरो पर सिमट गए। मित्तर कबल ओढ़कर लेट गया। चौकीदार ने बैरक का ताला खोला और वे सब अदर चले गए। सारे कैदी अपने-अपने चबूतरो पर बुरी तरह सहमे हुए बैठे थे। बेडियो वाला कैदी उसी प्रकार अपने चबूतरे पर सिर के नीचे हथेलिया रखे चित्त लेटा था। मरे हुए कैदी की लाश जमीन पर पडी थी। अदर आकर जेलर ने नबरदार से कुछ बात की। उसके बाद वे लोग बेडियो वाले कैदी के पास आ गए। वह कुछ देर वैसे ही लेटा रहा। तब उठकर

बैठ गया और किसी कपडे से अपना मुह पोंछने लगा। सिपाहियों ने उसके हाथों में हथकडी डाल दी और उसे लेकर बाहर चले गए। साथ में कोई अधिकारी भी था।

सुपरिंटेंडेंट मरे हुए कैदी के पास आ गया। जूते से उसने उसके सिर को हिलाया। वह एक ओर लुढक गया। उसने डाक्टर से कुछ कहा। डाक्टर ने झुककर उसकी नब्ज आदि देखी और चुपचाप हाथ लटकाकर खडा हो गया। जेलर दूसरे कैदियो से बातें करने लगा। तब सुपरिंटेंडेंट, डाक्टर आदि वहा से चले गए। जेलर और कुछ सिपाही वहा रुके रहे।

थोडी देर मे सारे कैदियो को लाइन लगवाकर वहा से बाहर ले जाया गया। सारी बैरक खाली हो गई। केवल मरे हुए कैदी की लाश बीच में पडी रही। उसकी आखें जो बाहर की ओर उभर आई थी बिजली के प्रकाश मे चमक रही थी। एक सिपाही बदूक लिए उसकी बगल मे खडा था।

कुछ देर लाश ऐसे ही पडी रही। तब दो सिपाही उसे एक स्ट्रेचर पर उठाकर ले गए। बैरक मे ताला लगा दिया गया।

हम सोच रहे थे कि आखिर सुपरिंटेंडेंट आदि को सूचना किसने दी? तभी किसी ने बताया कि घटना घटने के तुरंत बाद गश्त वाला चौकीदार राउड पर आया था। उसने नबरदार द्वारा आवाज न लगाए जाने पर बैरक मे झाका था और नबरदार से कुछ बात की थी। संभवत उसी ने सबको सूचित किया था।

हम लोग अपने बिस्तरो पर लौट आए थे। परंतु देर तक हमे नीद नही आई। कुछ लोगो को तो इस घटना ने बुरी तरह हिला दिया था। उन्नानी मिल के ख्यालीराम तब से लगभग एक बंडल बीड़ी फूंक चुके थे। पंडित जी पल्थी मारे बैठे बार-बार मुह पर हाथ फिरा रहे थे। गौतम आसपास के लोगो को समझा रहा था कि किस प्रकार बेडी वाले कैदी ने दूसरे कैदी का सिर अपनी बेडियो के बीच फसा लिया था। उसकी बेडियां टेढ़ी हो गई थी।

मित्तर ने एक-दो बार मुह बाहर निकाला, परंतु बोला कुछ नही।

हवा मे खुनकी बढ़ गई थी। सुबह होने मे एक-दो घंटे शेष रह गए

थे। मैंने कंबल से अपने आपको ढक लिया और आंखें बंद करके सोने का उपक्रम करने लगा। देर तक मेरी आंखों के सामने पिछले डेढ़-दो घंटों की घटनाएं नाचती रहीं। तब सारे चित्र आपस में गमड्ड होने लगे। कुछ ही देर में मैं गहरी नींद में था।

"उठिए-उठिए प्रार्थना का समय हो गया।" कोई मुझे हिला रहा था।

मैंने आंखें खोलीं। "यहां भी प्रार्थना होती है क्या ?" मैंने पूछा।

"हा, हा, उठिए। सबेरा हो गया।" वह आदमी मेरी बगल में लेटे प्रभात को हिलाने लगा।

प्रभात उठकर बैठ गया। मैंने देखा, गन्ना कामदार संघ के सारे लोग सामने मैदान में लाइन बनाकर खड़े हो रहे थे। उझानी मिल के लोग भी उनमें शामिल थे। दो-एक लोग किनारे लोटे में पानी लिए मुह धो रहे थे।

प्रभान ने सिगरेट जला ली थी। एक उसने मुझे भी दी। हम लोग भी सिगरेट पीते हुए आकर लाइन में खड़े हो गए।

गन्ना कामदार संघ के तीन व्यक्ति सामने एक लाइन में खड़े होकर प्रार्थना गाने लगे।

"हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए।"

सब प्रार्थना दुहराने लगे।

"बिला वजह नींद खराब कर दी", प्रभात ने कहा।

"यह खुद कमबख्त जेल बनाए हैं इसे।" हम सिगरेट पीते रहे।

प्रार्थना समाप्त होने के बाद लोग इधर-उधर टहलने लगे। कुछ लोग बैरक के पास जाकर सींखचो से उसके अंदर झांक रहे थे। मित्तर भी उनमें था। रात वाला भय और दहशत अब किसी के चेहरे पर नहीं थी। सुबह के प्रकाश में रात की वह घटना एक भयानक दुस्वप्न से अधिक नहीं लग रही थी।

मेरी आंखें कड़वा रही थीं। मैं अभी और सोना चाहता था। बैरक धुल रही थी। मैं उसके धुल चुकने की प्रतीक्षा करने लगा।

तभी नबी ने एक आदमी द्वारा हम लोगो को बुलवा भेजा। हम उसकी बैरक मे चाय पीने चले गए। मै, प्रभात, गौतम और रशीद।

नबी के पास दो कप और एक काच का गिलास था। उसी मे उसने हमे चाय दी। गौतम ने कटोरे मे ली। सुबह-सुबह चाय मिलने से हमारी तबियत प्रसन्न हो गई। चाय पीकर हम कुछ देर वही बैठे बाते करते रहे। रात वाली घटना की खबर इस बैरक मे पहुच चुकी थी। रात भी वे लोग सीखचो से झाक रहे थे। इतना अनुमान उन्हे तभी लग गया था कि कुछ झगडा हुआ है। मृत्यु के बारे मे उन्हे सुबह पता चला था। शायद गिनती वाले जमादार ने बताया था। नबी ने बताया कि झगडा मृत कैदी द्वारा दूसरे कैदी को 'चोर' कहने पर हुआ था।

तभी एक जमादार ने आकर उस बैरक के धुलने का भी आदेश दिया।

"लगता है आज सुपरिटेडेट का राउड होगा।" नबी ने कहा, "तभी बैरक धुलवाई जा रही है। वैसे राउड का दिन तो कल है।"

उसने चौकीदार से इस बारे मे पूछा तो वह कुछ ठीक बता नही पाया।

हम उठकर अपनी बैरक मे चले आए। हमारी बैरक तब तक धुल चुकी थी। मै चबूतरे पर बिस्तर लगाकर लेट गया।

मुश्किल से कुछ मिनट मुझे लेटे हुए हुआ होगा कि अचानक शोरगुल सुनकर मैं उठकर बैठ गया।

बैरक के अहाते मे कुछ लोग नारे लगा रहे थे—

"आदमी, आदमी"

"बराबर है।"

"ऊच-नीच, छुआछूत।"

"ढकोसला है, ढकोसला है।"

"हर काम से इज्जत।"

"बढती है बढती है।"

मैने बाहर निकल कर देखा। विश्वनाथ सिंह जाघिया पहने, हाथ मे झाडू-पजा लिए आगे-आगे चल रहे थे। उनके पीछे-पीछे और भी बहुत

से लोग थे। वे भी झाड़ू-पंजा लिए हुए थे। कुछ लोग मिट्टी के घड़ों में पानी लिए थे।

"वह लोग क्या करने आए हैं?" मैंने गन्ना कामदार संघ के एक व्यक्ति से पूछा।

"लैट्रीन साफ करेंगे।" उसने बताया।

मुझे आश्चर्य हुआ।

"आज ही आए हैं या रोज आते हैं?"

"दो-चार दिनों से आ रहे हैं।"

"इसी बैरक में आते हैं या औरों में भी जाते हैं।

"पता नहीं।" उसने कहा।

सारे लोग नारे लगाते हुए संडासों में घुस गए। एक गन्ना कामदार अंदर था शायद। वह जल्दी से अपनी धोती में लांग लगाते हुए बाहर निकल आया।

गौतम भी उन लोगों के झुंड में शामिल होकर नारे लगाने लगा था। बीच में हमारी ओर देखकर वह मुस्कराता भी जा रहा था। भंगी तब तक सफाई कर चुका था। वे लोग पानी-वानी डालकर नारे लगाते हुए वापस चले गए।

दूसरी वाली बैरक भी तब तक धुल चुकी थी। मैदान में दो-तीन कैदी झाड़ू लगा रहे थे। पूछने पर पता चला, सुपरिंटेंडेंट का राउंड आज ही होगा।

वैसे उसका राउंड अगले दिन होना था। परंतु शायद रात वाली घटना के कारण वह आज ही राउंड लगा रहा था।

सारे अहाते में झाड़ू लगने के बाद दोनों बैरकों के दरवाजों पर गेरू से फूल पत्तियां बनाई गईं। बड़े-बड़े अक्षरों में 'स्वागतम्' लिखा गया। हम लोगों को एक जमादार ने आकर कहा, कि हम लोग अपने-अपने कंबल, चादरें, तसले और कटोरे अपने-अपने चबूतरों पर सजा लें। उसने अपने हाथ से एक चबूतरे पर सजाकर दिखाया। कंबल को आधे चबूतरे पर बिछाकर ऊपर की ओर आधा उसे मोड़ दिया। फिर उस मुड़े हुए भाग पर उसने चादर तहाकर रखी और उसके ऊपर एक ओर तसला और दूसरी ओर कटोरा रख दिया।

हम सब लोगों ने उसी प्रकार अपना-अपना सामान सजा लिया। जमादार ने कहा कि जैसे सुपरिंटेंडेंट राउंड पर आए, हम लोग अपने-अपने चबूतरों पर उकड़ू होकर नमाज पढ़ने की मुद्रा में बैठ जाएं।

दूसरी बैरक के कैदियों को बाहर मैदान में लाइन लगाकर अभी से इसी प्रकार बिठा दिया गया। सब खामोश बैठे थे।

जमादार बार-बार गेट तक जाकर देख आता कि सुपरिंटेंडेंट आ रहा है या नहीं। बाहर बैठे हुए दूसरी बैरक के कैदियों को जब भी वे आपस में बातें करने लगते वह होंठ पर उंगली रखकर चुप कराता। उसके हावभाव से लग रहा था कि सुपरिंटेंडेंट बाहर चक्कर में है। थोड़ी देर बाद उसने गेट से ही हमे इशारा किया और वहां से हटकर मैदान में आकर चुपचाप खड़ा हो गया। हम लोग भी अपने-अपने चबूतरों पर उकड़ू होकर बैठ गए।

तभी सुपरिंटेंडेंट ने गेट से मैदान में प्रवेश किया। खासा दृश्य था। आगे-आगे सुपरिंटेंडेंट उसके पीछे एक चपरासी एक बड़ा-सा छत्र लिए हुए। जैसा प्राय: राजा-महाराजाओं के साथ होता है। बगल मे एक दूसरा चपरासी एक बडा-सा पंखा लिए हुए। उसके पीछे जेलर, डिप्टी जेलर, असिस्टेंट जेलर, डाक्टर और कंपाउंडर। पूरा रोटिनियू। सुपरिंटेंडेंट मैदान में आकर रुक गया। उसने जेलर से कुछ कहा। वह जमादार पर बिगडने लगा। जमादार ने पता नही क्या कहा जिस पर वह और बिगड़ा। थोड़ी देर बाद सारा का सारा रोटिनियू वापस लौट गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि पंखे और छत्र वाले के साथ फर्शी वाला क्यों नहीं था।

जमादार भागा-भागा हमारी बैरक में आया और हम लोगों से कहा कि हम लोग भी बाहर उसी प्रकार लाइन लगाकर बैठ जाएं। हम लोगों को कुछ गुस्सा आया। आखिर हमने कोई समाज विरोधी कार्य तो किया नहीं था। फिर हमारे साथ अन्य साधारण कैदियों की तरह व्यवहार क्यों किया जा रहा था। जमादार स्वयं आश्चर्य मे था। उसने कहा कि सुपरिंटेंडेंट का मूड बहुत खराब लगता है। वैसे राजनीतिक कैदियों की लाइन तो नहीं लगवाई जाती। पता नहीं आप लोगों को लाइन लगाने के लिए क्यों कह रहे है।

मैंने प्रभात से कहा कि हम लोग लाइन नहीं लगाएंगे।

गन्ना कामदार संघ के भी कुछ लोग हमसे सहमत थे। परंतु मित्तर डरा हुआ था। उसने अपना कंबल, तसला आदि उठाया और बोला, "मैं जाता हूं। आप लोग जो मर्जी आए कीजिए।"

जमादार हमारे हाथ जोड़ने लगा। आखिर धीरे-धीरे सभी लोग बाहर आ गए और हम लोग भी लाइन बनाकर मैदान में बैठ गए। नबी ने वहीं से हम लोगों को सलाम किया। और कैदी उसे देखकर मुसकराने लगे।

तभी मित्तर ने कहा, 'मेरा दिल बहुत घबड़ा रहा है।"

"क्या बात है?" मैंने पूछा।

उसने सीने पर हाथ रख लिया था, "पता नहीं। बहुत जोरों से धड़क रहा है।" उसने कहा।

"क्या चाहते हो धड़कना बन्द हो जाए?" मैंने पूछा।

वह चुपचाप रहा। मुझे लगा, वह बेहोश हो जाएगा।

तभी सुपरिटेंडेंट दुबारा अपने सारे रोटिनियू के साथ वापस आ गया। उसके आते ही हम सब तथा दूसरी लाइन वाले भी उठकर खड़े हो गए। मित्तर का दिल धड़कना बंद हो गया था। वह चुपचाप लाइन में खड़ा था।

सुपरिंट्रेंडेंट ने पहले दूसरी बैरक के कैदियो की लाइन का मुआइना किया। एक आध जगह उसने रुककर दो-एक कैदियों से बात भी की। उसके बाद वह हम लोगो की लाइन की तरफ बढ़ आया। आगे-आगे वह चलता, पीछे-पीछे छत्र और पंखे वाला चपरासी और उसके बाद अन्य अधिकारी।

गौतम ने मुझे कुछ इशारा किया। मैंने देखा मित्तर के पैर कांप रहे थे।

"क्या बात है? तबियत तो ठीक है न?" मैंने उससे पूछा।

उसने कोई जवाब नही दिया।

मैं चुप हो गया।

हम लोग लाइन के सिरे की ओर थे। सुपरिटेंडेंट ने बीच में रुककर नारदमुनि से कुछ बात की। फिर हम लोगों की ओर बढ़ आया।

हमारे सामने आकर वह रुक गया।

"आप लोग यहा कैसे आ गए ?" उसने पूछा ।

इससे पहले कि हममे से कोई कुछ कहता, जेलर ने उससे कहा कि उसने हमे यहा भेजा है । बोला इन लोगो ने वादा किया है, ठीक से रहेगे ।

वह चुप हो गया। तभी जेलर ने हमसे पूछा, "यहा तो आराम है आप लोगो को ?"

"इनकी तबियत खराब है ।" मैंने मित्तर के लिए कहा ।

सुपरिंटेडेंट आगे बढने वाला था। वह रुक गया बोला, "आप कौन हैं ?"

"मैं इनके साथ हू ।" मैंने कहा ।

"मैं जानता हू ।" वह बिगड गया, "लेकिन तबियत तो इनकी खराब है न कि आपकी ।"

"मैंने कब कहा मेरी खराब है ?"

उसने मुझे घूरकर देखा । मैं भी उसकी ओर देखता रहा ।

"क्या नाम है आपका ?" उसने अग्रेजी मे पूछा ।

मैंने अपना नाम बताया ।

"अभी जेल देखा नही है । पाच मिनट में दिमाग ठीक हो जाएगा ।"

"मैंने ऐसी तो कोई बात नही कही है ।"

"शटअप ।"

मैं चुप हो गया। वह आधे मिनट तक मुझे घूरता रहा। तब चला गया ।

मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था। लेकिन मैं चुप रहा। सुपरिटेंडेंट वापस जाने लगा तो जेलर कुछ पीछे रह गया। उसके आगे निकल जाने पर उसने कहा, "मैंने डाक्टर से कह दिया है अभी देख लेगा। जरा थोडा लिहाज किया कीजिए ।"

"आप उसका व्यवहार देख रहे थे ।"

"सुपरिंटेडेंट जेल का मालिक होता है भाई। फिर आज उनका मूड भी कुछ खराब है । कल वह वाकया हो गया था न ।"

वह मुझे हाथ के इशारे से शांत रहने को कहकर आगे बढ गया। सुपरिटेंडेंट गेट के बाहर निकल गया था । जेलर को दौडकर जाना पडा ।

उन लोगों के जाते ही लाइन टूट गई। सब हम लोगों के पास आ गए और पूछने लगे क्या बात थी। मैं अब भी बहुत गुस्से में था। प्रभात मुझको समझा रहा था कि मुझे गुस्सा नहीं करना चाहिए। जेल के अंदर वे कुछ भी कर सकते हैं।

मित्तर मुझसे बहुत ज्यादा नाराज था। उसका कहना था कि मुझे बोलने की क्या जरूरत पड़ी थी। अभी हमें वापस भेज दिया जाए दूसरी बैरक में तो : ?

कोई एक डेढ़ घंटे बाद डाक्टर दुबारा आया। उसके साथ एक नंबरदार तथा तीन कैदी थे। एक-एक कुर्सी, दूसरा स्टूल और तीसरा लकड़ी का एक बक्स लिए हुए था। डाक्टर कंपाउंड में कुर्सी डालकर बैठ गया। स्टूल पर लकड़ी का बक्स रख दिया गया।

थोड़ी देर में वहां खासी भीड़ लग गई। दोनों बैरकों के कैदियों ने आकर डाक्टर को घेर लिया। डाक्टर ने कैदियों से कई बार लाइन लगाने के लिए कहा। परंतु उन पर उसका कोई असर नही पड़ा।

दवाई बंटने लगी। मुझे आश्चर्य हुआ, डाक्टर ने किसी को भी नहीं देखा। बस मर्ज का नाम सुनता और नंबरदार को गोली का नंबर बताता जाता। किसी को भी तीन गोलियों से ज्यादा नही। मैंने गौर किया, गोली नंबर एक, दर्द चाहे वह कहीं का भी हो, जुकाम, बुखार आदि के लिए थी। गोली नंबर दो, दस्त, पेचिस तथा पेट के अन्य रोग, गले की तमाम बीमारियों, खांसी आदि के लिए थी तथा गोली नंबर तीन, हर उस मर्ज के लिए थी जो पहली दो गोलियों से कवर नहीं होते थे। कुछ भाग्यशाली ऐसे भी थे, जिन्हें दो तरह की गोलियां मिल गई थीं।

थोड़ी देर में जब भीड़ छट गई तो उसने मित्तर की ओर देखा जो दूर पर खड़ा था, और उसे बुलाया। मैं भी साथ-साथ चला गया। गौतम भी था।

"क्या शिकायत है आपको ?

मित्तर चुप रहा।

"दिल धड़कता है।" मैंने कहा।

मित्तर ने मेरी ओर घूरकर देखा।

डाक्टर ने उसकी नब्ज पकड़ ली थी।

"घर की याद आती है।" गौतम बोला।

"दिल लगा नहीं यहां शायद अभी आपका।" उसने कहा।

"क्यों ? सही बात है ?"

मित्तर ने दांत निकाल दिए।

"बैठ जाइए इधर।" डाक्टर ने स्टूल पर से दवाइयों का बक्सा हटवा दिया। मित्तर उसी पर बैठ गया।

पहली बार डाक्टर ने आले का प्रयोग किया और उसका सीना, पीठ आदि देखा।

"आप बिलकुल ठीक है ?" उसने कहा, "शिकायत क्या है ?"

"कमजोरी लगती है।"

"अस्पताल में भर्ती होइएगा ? मिल्क डाइट लिख दूं कहिए तो ?"

मित्तर चुप रहा।

"भर्ती होना चाहें तो थोड़ी देर में डिस्पेंसरी चले आइएगा।" उसने कहा।

"फिलहाल इन्हें कोई दवा दे दीजिए।" मैंने कहा।

डाक्टर ने तीन नंबर की गोली निकाल कर उसे दे दी। बोला, "सुबह, दोपहर, शाम खाइए।"

डाक्टर के जाने के बाद हम नबी की बैरक में आ गए। जिस प्रकार से डाक्टर ने रोगियों को निपटाया था उसे देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा था।

हम इसी विषय पर बात कर रहे थे। नबी ने कहा, "जरा डिस्पेंसरी भी हो आइए। वहां देखिएगा जैसे यहां गोली का नंबर है, वैसे ही वहां मिक्सचर का नंबर है। लूट है, लूट। बाहर का आदमी कुछ र-हेफर करे तो जेल भेज दिया जाए। यहां का यह सब करता है तो कौन देखता है ?

तभी उसने किसी लड़के को आवाज दी, "अबे ओ शरीफ ! देखिए आपको गाना सुनवाता हूं।" उसने कहा। शरीफ चुपचाप आकर खड़ा हो गया।

दुबला-पतला सतरह-अट्ठारह बरस का लड़का। पाजामा-बनियान

पहने हुए।

पता चला वह चौथी बार जेल आया है। नबी ने उसे गाने को कहा तो वह चुटकी बजा-बजाकर गाने लगा।

"सुनो जेल का बुरा रवैया, यहां कोई किसी का यार नहीं।
रामबांस की पड़ी मशक्कत, मेहनत से इन्कार नहीं।
मेहनत से इन्कार किया तो डंडों का शुमार नहीं।
कैदी कहे मरा मरा और डाक्टर कहे बिमार नहीं।"

मित्तर ने निश्चय किया कि वह भर्ती होगा। मैं और प्रभात उसको डिस्पेंसरी छोड़ने गए। गेट वाला नंबरदार हमें जाने नहीं दे रहा था। आखिर जमादार के कहने से जाने दिया। गोल चक्कर में ही एक फाटक डिस्पेंसरी में खुलता था। बड़ा-सा कंपाउंड था। बीच में फौव्वारा लगा था जो सूखा पड़ा। हाल के सामने वरांडे में एक ओर डिस्पेंसरी थी। डाक्टर वहां नहीं था। हमने झांककर देखा बड़ी-बड़ी तीन-चार बोतलों में मिक्सचर भरे रखे थे जिन पर लेबुल लगे थे। लेबुलों पर केवल नंबर पड़े थे। बोतल की साइज से मैंने अनुमान लगाया कि कम-से-कम सात दिन मिक्सचर चल जाता होगा, अगर सभी कैदियों को दिया जाए तो।

सामने हाल में चारपाइयां पडी थीं। प्रायः सभी पर एक कैदी लेटा या बैठा था। तीन चौथाई की दाढ़ी बढ़ी हुई थी। दो-एक पैर या हाथ में पट्टी बांधे थे। सभी खतरनाक लग रहे थे।

मित्तर उन्हें देखकर बोला, "मैं यहां भर्ती नहीं हूंगा।" और वह हाल के बाहर निकल आया। "कितनी तो गंदगी है।"

"जेल का अस्पताल है", प्रभात ने कहा, "मैन नर्सिंग होम नहीं है।"

तभी बाहर अहाते में कुछ शोरगुल सुनाई पड़ा।

हमने बाहर आकर देखा, आम के पेड़ के नीचे एक बावाजी केवल एक लंगोटी लगाए इस प्रकार बैठे थे जैसे समाधि में हों। कई कैदी, नंबरदार और जमादार उन्हें घेरे खड़े थे। हम भी उधर चले आए।

बाबाजी की ऊंचाई साढ़े तीन फुट से अधिक नहीं रही होगी। दाढ़ी भी उतनी नहीं तो उसकी आधी लंबी जरूर रही होगी।

पता चला वह किसी जुर्म में पकड़कर आए हैं और बोल नहीं रहे हैं।

सभी लोग उन्हें बुलवाने का प्रयत्न कर रहे थे परंतु बाबाजी खामोश थे।

कोई कह रहा था कि बिला टिकट ट्रेन में सफर करने में पकड़े गए हैं। कोई बता रहा था किसी का सोना दुगुना कर रहे थे उसमें पकड़े गए। कोई कह रहा था बच्चे चुराने में पकड़कर आए हैं।

"क्यों बोलते क्यों नहीं बाबाजी महाराज ?" जमादार ने उनसे कहा।

तभी वहां पुत्तन दिखाई दे गया। उसके साथ एक और आदमी था। पुत्तन कुर्ता पहने तहमद बांधे था। दूसरा आदमी कमीज-पाजामा पहने था। पुत्तन ने उससे हमारा परिचय कराया, "यह इस शहर के स्वर्णकार यूनियन के मंत्री है। तेरह दिन का उपवास करके आए है। सात-आठ दिन हुए है। तभी मुझे ध्यान आया कि जिस दिन हम लोग पकड़े गए थे उसके एक-दो दिन पहले उसके अरेस्ट होने की खबर अखबार में छपी थी। शहर की तमाम सोने-चांदी की दुकानों मे कारीगरों के वेतन का भुगतान पिछले कई महीनों से एरियर में था। कई वर्षों से उनके वेतन में बढोत्तरी भी नहीं हुई थी जबकि उन्हीं की मेहनत से मालिक लोग हजारों-लाखों कमा रहे थे। इन्हीं मांगों को लेकर उसने भूख-हड़ताल की थी। पहले तो किसी ने कोई परवाह नहीं की। परंतु जब उसकी हालत ज्यादा खराब हो गई तो पुलिस ने उसे अरेस्ट करके जेल भेज दिया। उसके जेल आ जाने के बाद शायद उसकी पत्नी उपवास पर बैठ गई थी।

हम डिस्पेंसरी से लौटकर आए तो देखा गुप्ता और विजय बैरक के बाहर अहाते में और लोगों के साथ खड़े मुस्करा रहे थे। हमने उनसे हाथ मिलाए और उनकी बातचीत में हिस्सा लेने लगे।

उन्होंने हमें बताया कि उन्होंने कोर्ट में सरेंडर किया था। तीन दिन तक अंडर ग्राउंड रहे। गुप्ता उस दिन जब प्रातः पुलिस उसके घर गई थी तो दूध लेने गया था। उसे रास्ते में पता चल गया कि पुलिस उसके घर पर आई हुई है। वह घर वापस नहीं गया। विजय घर पर ही था परंतु वह किसी तरह पुलिस को चकमा देकर बाहर निकल गया था। दोनों तीन दिन तक एक दोस्त के घर पर छिपे रहे, उसके बाद कोर्ट में सरेंडर कर दिया।

"तो तुम लोगों को कौन-सी क्लास मिली ?" मित्तर ने पूछा।

"हां, मैं तो बताना ही भूल गया।" उन्होने कहा, "तुम लोगो को भी बी० क्लास मिल गया है। मेरा ख्याल है कोर्ट मे आर्डर भी आ गया है। हम लोगो के साथ जो कास्टेबुल आया था कचहरी से, वही लाया है शायद।"

तभी देखा जेलर चला आ रहा है। वह हमी लोगो के पास आ रहा था।

"मुबारक हो", उसने हम लोगो से कहा, "आप लोगो को बी० क्लास का आर्डर हो गया है। पाच लोगो का।" हम समझ गए गौतम, रशीद और जयसिह का नही हुआ था। वे डी० क्लास के कर्मचारी थे। उनके चेहरे कुछ उतर गए।

"लेकिन भाई एक मुश्किल है", जेलर ने आगे कहा "आजकल तो आप जानते है जो रश है यहा। फिर यह जेल भी इतना बडा नही है। बी० क्लास की कुल छह आकोमोडेशन है यहा। उनमे मे पाच भरी हुई है।

"फिर ?" मित्तर ने कहा।

"आप लोग ऐसा कीजिए कि रहिए यही फेसिलिटीज बी० क्लास की हम आपको सब यही दे देगे। यहा आपके और साथी भी आपके साथ रह सकेगे। और फिर जब मर्जी आप इधर-उधर घूम आया कीजिएगा।"

"ठीक है।" प्रभान ने कहा।

"अच्छा, तो मैं अभी सारा सामान वगैरह आप लोगा का भिजवा देता हू। हा, यह बताइए आप लोग वेजिटेरियन है या नान वेजिटेरियन ?"

"नान वेजिटेरियन।" मैंने कहा। तभी मुझे ध्यान आया मित्तर और गुप्ता वेजिटेरियन है। मैंने उनकी ओर देखा।

"मै वेजिटेरियन हू।" मित्तर ने कहा।

"आप ऐसा कीजिए" जेलर ने कहा, "कागज मे नान वेजिटेरियन लिखा दीजिए। सब्जी तो वैसे ही मिलेगी।"

"हां, सभी का नानवेज लिखा लीजिए", मैंने कहा।

"नही। मैं नानवेज नही लूगा।" मित्तर ने आपत्ति की।

"कौन कहता है कि तुम नानवेज लो ?" मैंने उसे समझाया।

"तुम्हारी जो जी में आए खाना। लिखने में क्या हर्ज है।"

जेलर ने हमारी बात पर कोई गौर नहीं किया, "और हां", उसने आगे कहा, "आप लोग एक काम और कीजिए, इंगलिश डाइट लिखवाइए उसमें डबल रोटी, मक्खन आदि भी मिलेगा आप लोगों को।"

"ठीक। ऐसा ही लिख लीजिए।"

"एक बात और", उसने कहा, "खाना पकवाएंगे आप यहां या पका-पकाया लीजिएगा। उसमें एक बात है कि ठीक पकेगा नहीं। अपने सामने पकवाइएगा तो जैसे चाहिएगा वैसा पकवाइएगा।"

"लेकिन हम लोग कहां पकवाएगें यहां। पकाएंगे कौन ?"

"वह सब इंतजाम हो जाएगा। नौकर मिलेगा आपको।"

"जैसा आप ठीक समझिए।"

"अच्छा तो मैं अभी आता हूं।" थोड़ी देर में वह चला गया।

सारी बैरक मे खबर फैल गई थी कि हम लोगों को बी० क्लास मिल गया है। गन्ना कामदार संघ के कुछ लोग आकर हम लोगों से इस संबंध में बातें करने लगे।

कोई एक घंटे बाद जेलर लौटकर आया। उसके साथ दो कैदी थे। सामान लिए हुए एक अंगीठी, पांच कप, पिरचें, केतली, एक डिब्बा मक्खन, डबल रोटी, आटा, सब्जी, चावल, नमक, मसाला, चाय का पैकेट, माचिस, शक्कर आदि। हम लोग पैकेट खोल-खोलकर देखने लगे। एक पैकेट में अंडे भरे हुए थे।

"आज तो आप लोगों मे पूछा नहीं था", जेलर ने कहा, "इसीलिए अंड़े ले आया। पंद्रह हैं ये। कल सुबह के लिए बताइए, खाइए तो गोश्त मंगवा दूं या फिर मछली।"

"कुछ देर बाद हम लोग तै करके बता देंगे आपको।" मैंने कहा।

"ठीक है बाद में बता दीजिएगा या कल सुबह बता दीजिएगा। मगर सुबह जरा जल्दी ही कहलवा दीजिएगा। शहर से मंगवाना पड़ेगा। और हां, देखिए, यह दो आदमी आपकी हाजरी में रहेंगे यहां।" उसने उनमें से एक की ओर इंगित किया, "पंड़ित है। इससे खाना बनवा लिया कीजिएगा।" उसने हम लोगों को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और अपने

गंदे दांत बाहर निकाल दिए। उसके बड़े-बड़े खिचड़ी बाल थे और दाढ़ी बढ़ी हुई थी।

"तुम सब खाना बना लोगे मीट वगैरह ?"

"जी साहब।"

"और यह दूसरा आदमी भी आपकी सेवा में रहेगा। इससे और सभी काम करा सकते हैं। कपड़े वगैरह छटवाने का।"

दूसरा आदमी चुपचाप खड़ा रहा। केवल उसका चेहरा कुछ और दयनीय हो आया। उसकी आयु लगभग पैतालीस वर्ष रही होगी। रंग बिलकुल काला था और वह सिर पर टोपी लगाए था।

"ठीक है।" मैंने कहा।

जेलर जाने लगा "लकडी, कोयला और चाय के लिए दूध अभी भिजवा देता हूं।" चलते-चलते उसने कहा।

"सुनिए।" प्रभात ने उससे कहा, "हम लोगों की चादरें वगैरह अगर बदल सकें तो बदलवा दीजिए। बहुत गंदी हो गई हैं।"

"मैं नई चादरें भिजवा देता हूं। जो आदमी लेकर आए उसी के हाथ यह वापस कर दीजिएगा। और हां, मैं भूल गया था। आप लोगों को अखबार भी मिलेगा। जो कहिए मंगवा दू। कल से।"

" 'हेराल्ड' मंगवा दीजिए।"

"ठीक है। हिंदी का तो नहीं चाहिए ?"

" 'हेराल्ड' की जगह।"

"नही, हिंदी का अलग से मिल जाएगा।"

" 'स्वतंत्र भारत' मंगवा दीजिए।" मित्तर ने कहा।

"ठीक। कल से मिल जाएगा।"

जेलर चला गया। थोडी देर में एक कैदी लकड़ी के कोयले और दूध हमें दे गया।

हम लोगों ने तुरंत अगीठी सुलगवाई, वहीं पेड़ के नीचे और अंडे उबलवाकर चाय बनवाने लगे।

तभी हमने देखा एक तगड़ा-सा आदमी केवल लंगोट पहने अहाते में उछल-कूद रहा है। कूदते-कूदते वह कभी दौड़कर दीवाल से टकरा जाता।

फिर जमीन पर लोटने लगता। तब फिर ताल ठोक कर उछलने लगता।

हम सभी डर गए, "यह कौन आदमी है?" मैंने गन्ना कामदार सघ के कुछ लोगो से पूछा जो वहा टहल रहे थे।

वे हमारे चेहरो पर भय और आश्चर्य देखकर हसने लगे और देर तक हसते रहे।

तब उन्होने हमे बताया कि वह उन्ही का एक साथी था। उसे कुश्ती लड़ने की आदत थी और कई दिनो से बिना कुश्ती लडे उसका बदन टूट रहा था। इसलिए वह यह सब कर रहा था। हमारी जान मे जान आई।

चाय बन गई थी। हम कपो मे चाय पीने लगे। तभी ख्यालीराम जी अपना कटोरा लिए हुए हमारे पास आए।

"थोडी-सी बची हो तो हमको दीजिए।" उन्होने कहा।

"जरूर-जरूर," हमारे पास काफी चाय बची थी। थोडी हमने ख्याली-राम को दी। थोडी गन्ना कामदार के दो-एक और लोगो को भी दी।"

शाम को अहाते मे पानी का छिडकाव हुआ और हम लोगो ने अपने-अपने बिस्तर बाहर निकालकर जमीन पर बिछा लिए। मित्तर गन्ना काम-दार सघ के कुछ लोगो को लेकर एक ओर कबड्डी खेलने लगा। उसने अपनी धोती को ऊपर उठाकर कमर मे खोस लिया था और 'चल कबडडी डी डी' करता हुआ एक पाले मे दौड लगा रहा था। गौतम खाना पकाने वाले पडित से बैठा गप्प कर रहा था। कुछ लोग बैठे ताश खेल रहे थे। तभी हमने देखा विश्वनाथ सिंह चले आ रहे है। आकर वह हम लोगो के बीच मे बैठ गए और इधर-उधर की बाते करने लगे।

"इस देश का भाग्य ऐसे नही बदलेगा", वह कह रहे थे, "जब तक यह काग्रेस सरकार है तब तक कुछ नही होगा। कहने को समाजवाद की बात यह भी करते है मगर एक-एक मिनिस्टर की चोटी टाटा-बिरला के हाथ मे है। बीस साल हो गए हुकूमत करते हुए, मगर गरीबी देश मे पहले से कही ज्यादा है। भुखमरी, बेरोजगारी की सीमा नही। मुझे तो आश्चर्य होता है कि कैसे जनता इनको बरदाश्त कर रही है।" काफी देर तक वह हमको समाजवाद समझाते रहे। तभी उनके आने के कोई आधा घटे बाद देखा कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्ससिस्ट) वाले मौलाना चले आ रहे हैं। उनके

आते ही विश्वनाथ सिंह उठकर खड़े हो गए। "आइए, आरिफ साहब, बैठिए।"

आरिफ साहब बैठ गए। विश्वनाथ सिंह चलने लगे तो उन्होंने कहा, "बैठिए न।"

"नहीं, मैं अब चलूंगा।" विश्वनाथ सिंह उठकर चले गए।

आरिफ साहब भी हम लोगों को देर तक वही सब बातें समझाते रहे। साथ में यह भी कहते जाते, "चीन को देखिए। भारत के बाद आजाद हुआ। मगर भारत से दुगुनी तरक्की की है उसने। मगर यहां क्या है साहब ! बीस सालों में खाने तक की समस्या हल नहीं कर पाए।" बीच-बीच में आरिफ साहब हम लोगों से यह भी पूछते जाते कि हम लोगों को कोई तकलीफ तो नहीं है।

आरिफ साहब भी आध घंटे बैठे होंगे, तभी सी. पी. आई. के दिलीप बाबू आ गए। मुझे लगा, इन लोगों में कोई समझौता-सा है। क्योंकि दिलीप बाबू के आते ही आरिफ साहब उठकर खड़े हो गए और उनके रोकने के बावजूद नहीं रुके। दिलीप बाबू भी हम लोगों से वही सब बातें करते रहे। हम लोगों के आंदोलनों के बारे में पूछते रहे और उस संबंध में अपने सुझाव देते रहे। तब कुछ ही देर बाद वह भी उठकर चले गए। मित्तर इस सारे समय गंभीर बना बैठा रहा। उसकी शक्ल से लग रहा था कि उन लोगों की बातों से वह काफी क्रुद्ध था।

उनके जाने के बाद जयसिंह ने मुझसे पूछा, "यह सब एक ही बात करते हैं फिर अलग-अलग पार्टी में क्यों हैं ? यह सब पार्टियां मिलकर एक क्यों नहीं हो जातीं ?"

मेरी समझ में नहीं आया, मैं क्या उत्तर दूं ?

खाना परेड शुरू हो गई थी। बड़े-बड़े बाल्टों में खाना आया और सारे गन्ना कामदार संघ और उझानी मिल वाले लाइन लगाकर बैठ गए। हम लोगों का खाना पक गया था। हम लोग भी उठकर खाना खाने चले गए।

खाना खाने के बाद फिर सब लोग जमा हुए। मित्तर आज फिर गन्ना

कामदारों के बीच जाकर बैठ गया। पहले वहां गाने आदि हुए उसके बाद मित्तर भाषण देने लगा।

"बौद्धिक क्लास ले रहा है।" विजय ने कहा।

"बौद्धिक क्या होता है?" प्रभात ने पूछा।

"बौद्धिक नही जानते? इन लोगों के यहा शाखा में होता है।"

"भरभट कर दू?" गौतम ने कहा।

"कर दो।"

"ठीक।" वह संभलकर बैठ गया और कान पर एक हाथ रखकर बहुत ही सुरीली आवाज मे गाने लगा—

"वह आयेंगे तो रंग-ओ-नूर की बारात आयेगी।

हम आयेंगे तो बदनामी हमारे साथ आयेगी।"

गन्ना कामदार संघ के लोग मुडकर उसकी ओर देखने लगे। फिर धीरे-धीरे उठकर इधर आ गए। ख्यालीराम भी उठ आए। वह महफिल उखड गई। इधर नई महफिल जम गई।

गौतम गजल पर गजल गाता रहा। गन्ना कामदार संघ के कुछ लोगों ने भी एक-आध गाने सुनाए। देर तक यह प्रोग्राम होता रहा। तब हम लोग सो गए।

खाना आदि बनाने के लिए जो दो कैदी हम लोगों को मिले थे, वे शाम को ही दूसरी बैरक में चले गए थे। सुबह वे फिर आ गए। पंडित काफी प्रसन्न था, क्योंकि हम लोगों के खाने से उसे भी मिल जाता था। वैसे खाना हम दूसरे कैदी को भी देते थे परन्तु या तो उसकी शकल ही कुछ ऐसी थी, या फिर उसे किसी भी प्रकार की प्रसन्नता नही थी। उसके चेहरे का भाव सदा एक-सा रहता। पंडित हम लोगों से इधर-उधर की गप भी करता रहता। परंतु वह हमेशा चुप रहता। दिन में मैंने उसे अपने पास बुलाया, "क्या नाम है तुम्हारा?" मैंने पूछा।

"रामदीन।" उसने बताया।

"कहां के रहने वाले हो?"

वह चुप रहा। शायद समझा नहीं।

"गांव कहां है तुम्हारा?" मैंने अपनी बात स्पष्ट की।

"फरुखाबाद में।"

"क्या नाम है।"

"रामदीन।"

"तुम्हारा नहीं, तुम्हारे गांव का ?"

"पंचमपुर।"

"किस जुर्म में बंद हो ?"

वह फिर मेरी बात नहीं समझा।

"तुमको यहां क्यों बंद कर दिया गया ?"

"का मालूम।" उसने कहा।

"तुमको मालूम नही कि तुमको यहां क्यों बंद किया गया ? कितने दिन की सजा हुई तुम्हें ?"

"हमको नही मालूम।"

मुझे आश्चर्य हुआ।

"यहां आने मे पहले तुम क्या करते थे ?"

"मजूरी।"

"कहां ?"

"गांव में।"

"किसके यहां ? क्या काम करते थे ?"

"मिट्टी-विट्टी ढोते थे। किसी का छप्पर-छानी लगा दिया, रुपया-धेले मिल जाता रहा।"

"पकड़ क्यों लिया तुमको ?"

"का जाने।"

"किसने पकड़ा।"

"पुलिस ने।"

""गांव में और कौन है तुम्हारे ? बीबी-बच्चे हैं ?"

"औरत थी, सो मर गई। कई बरस हो गए।"

"बच्चे ?"

"एक लड़की रही।"

"कहां है आजकल ?"

"जाने कहां है ?"

"शादी हो गई उसकी ?"

"न।"

"क्या उमर है ?"

"अठारह-उन्नीस होगी।"

"और तुम्हें पता नही कहां है ?"

"हमको तो हियां बंद कर दिया।"

"तुमने चिट्ठी-विट्ठी नही लिखी कभी किसी को ?"

"लिखी थी।'

"किसे ?"

"गांव मे डाली थी ?"

"किसके पास ? लड़की के पास ?"

"हां।"

"कुछ जवाब आया ?"

"न।"

"कचहरी से सजा हुई होगी तुमको न ?"

"का जाने।"

'कोई वकील था तुम्हारा ?"

'"न।"

"घर है वहां गांव में ?"

"था तो, अब कहां होगा ? गिर-विर गया होगा बरसात में।"

"गांव मे और किसी को नहीं जानते।"

"सभी को जानते हैं।"

"तुम कहो तो मैं किसी को चिट्ठी लिख दू।"

"लिख दो।"

"किसको लिख दू।"

"कीका बताई। लेखपाल बाबू को लिख दो।"

"क्या लिख दू ?"

"जो आप ठीक जानो।"

"यहां से छूटकर कहां जाओगे ?"

"देखो कब छूटित है। हमका तो लागत है छोड़ेंगे नहीं हमको।"

"क्यों ?"

"छोड़त तो अब तक छोड़ देत। तीन बरस हो गए।"

"लड़की की याद नहीं आती कभी तुम्हें।"

वह चुप रहा। मैंने देखा उसकी आंखें डबडबा आई थी। उसने आंखें पोंछ डाली। तब मुझसे बोला, "पैर दबा दें आपके।"

"नहीं, नही।" मैंने कहा।

आज काफी बडी संख्या मे लोग हमसे मिलने आए। वे हमारे लिए ढेर सारे आम, तरबूज और सिगरेट आदि ले आए थे। हमने अपने खाने भर का सामान रख लिया। शेष गन्ना कामदार सघ और उभानी मिल वालों को दे दिया। नारदमुनि जी पहले उसे स्वीकार नहीं कर रहे थे। परंतु फिर बाद में मान गए। उन्होंने चाकू से खरबूजे काटकर अपने सदस्यों मे बांट दिया।

उभानी मिल के लोगों मे ख्यालीराम ने फल नही लिए बोले, "हमें आप एक पाकिट मिगरेट दे दें।'

"जरूर, जरूर।" मैंने उन्हें सिगरेट का पैकेट दे दिया, "मगर यह फल भी ले लीजिए।"

"फल मैं नहीं खाता।" उन्होंने कहा।

"फल नहीं खाते ?" मुझे आश्चर्य हुआ।

"कोई दस वर्ष हो गए मैंने कोई फल नहीं चखा।"

"डायबेटीज वगैरह है क्या आपको ?"

"नही तो।"

"फिर फल क्यों नहीं खाते आप ?"

"वैसे ही। भर पेट खाना तो मिलता नहीं लोगों को। फल क्या खाऊं ?"

उन्होंने सिगरेट सुलगा ली थी और बड़े आनंद से पी रहे थे।

"'नेशनल हेराल्ड', 'पायनियर', 'नवजीवन', 'कौमी आवाज'।" मैंने मुड़कर देखा, "बैरक के गेट पर एक कैदी अखबार बंडल में लपेटे लिए

खड़ा था।

"लाओ भाई।" कुदरत, गन्ना कामदार संघ का सदस्य अपने चबूतरे से उठ आया।

" 'हेराल्ड' किसका है ?" अखबार वाले कैदी ने पूछा।

"मेरा।" मैंने कहा।

वह मेरे चबूतरे की तरफ बढ़ आया। एक प्रति निकाल कर उसने मुझे दे दी।

" 'स्वतंत्र भारत' और 'कौमी आवाज' भी आपको दे दूं ?"

"दो, दो।" कुदरत ने कहा।

वह चलने लगा तो कुदरत ने उससे कहा, "रुको भाई। जरा बाबूजी को सुनाए जाओ, वह कर बदकर वाला।"

"क्या है भाई, सुनाओ जरा।" मैंने भी कहा।

"क्या सुनाएं ?" उसने अखबार का बंडल चबूतरे पर रख दिया और दोनों हाथों की उंगलियां हवा में नचाने लगा, "यह थीं कर", वह बोला, "हो गईं बदकर। आंख झपकी, माल अंदर। मगर फिर चला तकदीर का चक्कर। घर हो गया परदेश, जेल हो गया घर।"

"यह सुपरिंटेंडेंट कौन हैं तुम्हारे ?" कुदरत ने पूछा।

"ससुर।" उसने औरतों की तरह शर्माते हुए कहा।

"और जेलर ?"

"चचिया सुसर।"

"और डिप्टी जेलर ?"

"साला।"

"तो ससुराल में रह रहे हो यहां ?"

"अब जाने ही नहीं देते, तो क्या करें। घरजमाई जो बना लिया है।" वह बुरी तरह शर्मा रहा था।

चला गया, तो कुदरत ने हमें बतलाया, "अपने जमाने का बड़ा शातिर गिरहकट और चोर था यह, जरा से सीखचों के बीच से निकल जाता था। पुलिस ने मार-मारकर तोड़ दिया इसको। उंगलियां सब टूटी हैं। देखा था आपने या नहीं।"

"मैंने खास गौर नही किया परंतु टेढी जरूर थी कुछ देखने में।"

"काम थोड़े कर सकता है हाथ से।" तभी तो अखबार बाटने में डियूटी लगा दी गई है। चार-पांच साल से है यहां।"

"यहां भी चोरी करता होगा ?"

"क्या मजाल ! यही तो खासियत है। एक चीज नही छुएगा आपकी। जेलर सुपरिटेंडेंट का मुह चढा है।"

बी० क्लास मिल जाने मे हम लोगों को अपेक्षाकृत छूट मिल गई थी। जब हम चाहते चक्कर, डिस्पेंमरी आदि घूम आते थे। प्रार्थना आदि हो चुकने के बाद मैं और प्रभात चक्कर मे निकल जाते थे।

"चलो आज विश्वनाथ सिंह मे मिल आए किस बैरक मे है ?" प्रभात ने कहा।

"पाच मे।" मैंने बनाया, "चलो चलें।"

गेट के चौकीदार ने हमे रोका नही। हम सीधे अंदर चले गए। वहां विचित्र दृश्य था। हर पार्टी के झंडे जमीन पर गड़े थे और अलग-अलग पार्टी के कैदी अलग-अलग लाइनो मे खडे प्रार्थना गा रहे थे।

प्रभात उन्हे देखकर मुसकराया, "लो, यहा भी प्रार्थना हो रही है।" उसने कहा।

"प्रार्थना जेल का आवश्यक नियम मालूम होता है।" मैंने कहा।

हम दोनों चुपचाप खडे हो गए। विश्वनाथ सिह, आरिफ साहब और दिलीपदास ने हमे देखा और अपने स्थान पर खड़े-खडे ही बिना कुछ बोले आखों-आंखों मे ही हमारा स्वागत किया। हम लोगों ने हाथ उठाकर उनका अभिवादन किया और चुपचाप खड़े होकर प्रार्थना सुनने लगे।

परंतु यह प्रार्थना नही थी। गीत और गजलें थी। उनमे समाज को बदलने, देश से गरीबी दूर करने और समाजवाद स्थापित करने की बात थी।

कविताए समाप्त हो गई, तो लाइनें टूट गई। विश्वनाथ सिंह ने भी बढ़कर हमारा स्वागत किया।

"आओ भाई, आओ। सुनाओ क्या हाल हैं ? अब तो कोई तकलीफ

नही आप लोगों को ?"

"नहीं नहीं।" हमने कहा, "आपकी मेहरबानी है।"

काफी देर तक हम लोग उन लोगों से बातें करते रहे।

उन्होंने हमें चाय पिलाई और भुने हुए चने खाने को दिए। कोई एक घंटे बाद हम उनसे क्षमा मांगकर चले आए, "शाम को तो उधर आएंगे न ?" हमने पूछा।

"हां, हां।" उन्होंने कहा।

परंतु शाम को विश्वनाथ सिह हमारी बैरक मे नही आए। हमें पता चला कि वह सुपरिंटेंडेंट के कमरे मे लेटे हैं और वहां से उठ नही रहे है। पता लगा, आज सुबह उनकी पेशी थी। पहले मजिस्ट्रेट स्वयं जेल आने वाला था। बाद मे उसका टेलीफोन आया कि विश्वनाथ सिंह को वही भेज दिया जाए। कोई दस बजे कचहरी ले जाने के लिए बुलवाया गया था। उन्हे पता चला तो वे कसरत करने लगे। कोई आध घंटे तक वह कसरत करते रहे। उसके बाद शरीर मे तेल की मालिश की। फिर स्नान करने लगे। जेलर परेशान हो गया। वह स्वयं उन्हें बुलाने गया। परंतु जब तक वह पहुंचे, वह पूजा पर बैठ चुके थे। और डेढ घंटे तक पूजा पर बैठे रहे। जेलर, सुपरिंटेंडेंट सब परेशान हो गए। उन्होंने मजबूर होकर मजिस्ट्रेट को फोन पर सारी बात बताई। मजिस्ट्रेट ने तारीख बढ़ा दी और दुबारा रिमांड दे दिया। इसी के दस-पंद्रह मिनट बाद विश्वनाथ सिंह तैयार होकर सुपरिंटेंडेंट के कमरे मे आ गए। अब सुपरिंटेंडेंट उनसे कहे कि आप कृपया लौट जाइए, आज कोर्ट नही जाना होगा। मगर वह कहें कि मैं जा के ही रहूंगा। पहले क्यों कहा गया। इसी बात पर जिद पकड गए और वही सुपरिंटेंडेंट की मेज पर लेट गए। पता लगा सब लोग मनाकर हार गए मगर वह उठने का नाम नहीं ले रहे हैं। मजबूर होकर सुपरिंटेंडेंट ने एक चौकीदार की ड्यूटी वहीं पर लगा दी और अपने बंगले चला गया।

बाद में पता चला कि रात कोई दो बजे उठकर वह टहलने लगे। वह आगे-आगे और चौकीदार पीछे-पीछे। कभी इस बैरक में जाते, कभी उस

बैरक में। कभी चक्कर में तो कभी डिस्पेंसरी में। आखिर चौकीदार थक-कर उनके हाथ जोड़ने लगा। कोई तीन बजे वह अपनी बैरक में गए और देर तक वह नारे लगवाते रहे।

"इन्कलाब। जिंदाबाद!"

"रोटी कपड़ा दे न सके जो। वह सरकार निकम्मी है।"

"जो सरकार निकम्मी है वह सरकार बदलनी है।"

जेलर मिनट-मिनट में टेलीफोन पर सुपरिंटेंडेंट को सूचना देता रहा। आखिर तीन बजे जब वह अपनी बैरक में चले गए तो सुपरिंटेंडेंट ने आदेश दिया कि बैरक के फाटक में बाहर से ताला डलवा दो और सुबह जब मैं आ जाऊं तभी खोलो।

दूसरे दिन सुबह हम लोगों को आदेश मिला कि यह बैरक खाली कर दो। हम लोगों को दूसरी बैरक में ले जाया गया, जो अपेक्षाकृत छोटी थी। सुबह असिस्टेंट जेलर हम लोगों को खाने आदि के लिए पूछने आया तो पता चला कि हमारी वाली बैरक में राजनीतिक कैदी रखे जाएंगे। उसने बताया कि राजनीतिक पार्टियों में आपस में झगड़ा हो गया है और पार्टियां अलग-अलग बैरक डिमांड कर रही हैं।

शाम को चक्कर में दिलीप दास से भेंट हुई तो उन्होंने बताया कि झगडा जमानत के सवाल को लेकर हुआ है। पार्टियों ने शुरू में तय किया था कि वह जमानत नहीं करवाएंगी परंतु कम्युनिस्ट पार्टी (मार्कसिस्ट) ने अपना इरादा बदल दिया। उन्होंने अपने सदस्यों की जमानत करवानी शुरू कर दी। इसी बात को लेकर झगडा शुरू हुआ। सबसे पहले मार्क-सिस्टों ने अलग बैरक की मांग की। पहले तो सुपरिंटेंडेंट टालता रहा। बाद में उसने आदेश दिया कि सभी पार्टियों को अलग-अलग बैरकों में कर दिया जाए।

उस दिन से हमारी बैरक में राजनीतिक नेताओं का आना भी बंद हो गया।

इसी बीच एक और घटना हो गई। मित्तर रोज शाम को गन्ना काम-दार संघ और उझानी मिल वालों की बैठक में भाषण दिया करता था। एक शाम उसने अपने भाषण में मुसलमानों के खिलाफ कुछ बातें कह दीं

जिससे गन्ना कामदार संघ के तमाम मुसलमान सदस्य उसके खिलाफ हो गए। दूसरे दिन उन्होंने तय किया कि आज से वे मित्तर को अपने बीच में नही आने देंगे।

दूसरे दिन शाम को बैठक शुरू होने से पहले ही नारदमुनि ने मित्तर को इस फैसले से अवगत करा दिया। उसने कुछ सफाई देनी चाही परतु नारदमुनि ने उसे साफ मना कर दिया, "आपके कारण, मैं अपने सदस्यो को नाराज नही कर सकता।"

विवश होकर मित्तर चुपचाप एक ओर अकेले बैठ गया।

"मैं पहले ही से जानता था", प्रभात ने कहा, "यह एक न एक दिन कुछ उलझन पैदा करेगा। वही हुआ।"

अब गन्ना कामदार सघ के लोग एक ओर अलग बैठकर आपस मे बातचीत करते, हम लोग दूसरी ओर और मित्तर बिलकुल अलग, अकेले। उभानी मिल वाले पडित जी और उनके दो और साथी भी चुपचाप अकेले बैठे रहते। बस ख्यालीराम कभी हम लोगो के पास और कभी चुपचाप अकेले इधर-उधर बैरक के अहाते मे टहलते रहते।

ख्यालीराम राजनीति आदि के चक्कर से मुक्त थे। राजनीति किस चिडिया का नाम है यह भी उन्हे मालूम नही था। मिल मालिकों से पिछले पाच वर्षों से वह तनख्वाह बढवाने के सिलसिले मे बातचीत चला रहे थे। मिल मालिक उन्हे एक के बाद एक हीला-हवाला बताते रहे। आखिर जब उनकी समझ मे कुछ नही आया तो उन्होंने मिल के गेट पर भूख हडताल शुरू कर दी। कुछ दिन वही गेट पर करते रहे, तब किसी ने उनसे कहा कि यहा अनशन करने से कुछ नही होगा। अनशन करना हो तो सरकार के द्वार पर करो जाकर। वह अपने साथियो को लेकर लखनऊ आ गए और तपती दुपहरी मे सचिवालय के सामने बैठ गए। तेइस दिन तक वे और उनके साथी वहां बैठे रहे। तब एक दिन पुलिस आई और उनको पकडकर जेल ले आई। ख्यालीराम जेल चले आए। यहा उनको और कोई कष्ट नही था, हा बीडी-सिगरेट की तलब कभी-कभी परेशान कर देती थी। सो वह समस्या भी हम लोगो के आने से किसी सीमा तक हल हो गई थी।

मैंने ख्यालीराम से कई बार बात की थी कि अब उनके केस मे क्या

हो रहा है? उनकी जमानत वगैरह का कोई प्रबंध हो रहा है या नहीं? उनकी मांगों का क्या हुआ? परंतु ख्यालीराम इस ओर से बिलकुल निश्चित थे। उनका विश्वास था कि एक-न-एक दिन वे रिहा होंगे और उनको मांगें भी पूरी होंगी। कारण? उनकी मांगें जायज जो थीं!

गन्ना कामदार संघ का आंदोलन शिथिल पड़ गया था पिछले कई दिनों से उनका कोई भी सत्याग्रही नहीं आया था। न ही बैरक में 'मजदूर एकता' या 'गन्ना कामदार संघ जिंदाबाद' के नारे लगे थे। नारदमुनि कुछ दुखी दिखाई देते थे। उन्होंने एक भूल की थी जिसका एहसास अब उन्हें होने लगा था। वह गन्ना कामदार संघ के प्रादेशिक सचिव थे और पहले बैच में जेल चले आए थे। उनकी अनुपस्थिति में आंदोलन का नेतृत्व डगमगा गया था। छोटे पदाधिकारी भी कुछ बंद हो गए थे। शेष की कोई खबर नहीं थी। पता चला था कि सचिवालय के सामने से उनका तंबू-कनात सब हटा दिया गया था और पुलिस ने उसे अपने कब्जे मे ले लिया था। सारी सामग्री पैंतीस रुपया रोज किराए पर लाई गई थी। उसका किराया भी पैंतीस रुपये रोज की दर से चढ रहा था।

जिन मांगों को लेकर उन्होंने आंदोलन चलाया था, उसका भी कोई समाधान नजर नही आ रहा था। शुरू में कुछ राजनीतिक नेताओं के वक्तव्य उनकी मांगों के पक्ष में अखबारों में छपे थे परंतु इधर काफी दिनों से किसी का कोई वक्तव्य भी नही आया था। ज्यादातर नेता स्वयं जेल में बंद थे। यहां से कोई वक्तव्य देना संभव नहीं था।

सरकारी प्रवक्ता का वक्तव्य जरूर अखबारों में निकला था कि गन्ना कामदार संघ बिना शर्त अपना आंदोलन वापस ले ले, तो सरकार उनकी मांगों पर विचार करेगी। साथ-साथ सरकार ने यह भी धमकी दी थी कि अनुशासन तोड़ने वालों के प्रति कड़ी कार्यवाही की जाएगी। नारदमुनि चिंतित थे कि यदि बाहर लोगों ने आंदोलन वापस ले लिया और चुपचाप काम पर चले गए तो जेल वाले साथियों को रिइंस्टेट कराना ही सबसे बड़ी समस्या हो जाएगी। मांगें सभी धरी रह जाएंगी।

गन्ना कामदार संघ के कुछ और सदस्य भी इस प्रकार सोचने लगे थे और आपस में अलग-अलग तीन-चार के गुटों में इस प्रकार की बातें किया करते। वे नारदमुनि के नेतृत्व और दूरंदेशी की कमी की आलोचना करने लगे थे। दो-एक लोग जरूर लापरवाह थे, जैसे कुदरत और रामप्रसाद जो हर समय सुबह, दोपहर, शाम रशीद और गौतम के साथ ताश खेलने में जुटे रहते।

नारदमुनि दिन-भर इधर-उधर बाहर के लोगों को पत्र लिखा करते कि आंदोलन किसी भी कीमत पर वापस न लिया जाए। यह चिट्ठियां वे जो लोग उनसे मिलने आते उनके हाथ भिजवाते रहते।

दोपहर का समय था। भोजन परेड हो चुकी थी। सब अपने-अपने चबूतरों पर विश्राम कर रहे थे। रशीद, कुदरत, गौतम और रामप्रसाद एक चबूतरे पर ताश खेल रहे थे। ख्यालीराम वहीं बगल में बैठे हाथ में जलती बीड़ी लिए खेल देख रहे थे। हालांकि वह गुलाम और बादशाह में अंतर नहीं बता सकते थे। मिन्नर अपने चबूतरे पर लेटा रामदीन से पांव दबवा रहा था। प्रभात लेटा अखबार पढ़ रहा था। विजय कोई पुस्तक उलट रहा था। नारदमुनि अपने चबूतरे पर झुके मेंढक की तरह बैठे कुछ लिख रहे थे। तभी एक नंबरदार बरक में घुसा।

"नारदमुनि कौन हैं ?" उसने पूछा।

नारदमुनि चौंके, "क्या है ?" उन्होंने कहा।

"तार है आपका।"

नारदमुनि अपने चबूतरे से उठे नहीं। केवल अपना काम बंद करके उसकी ओर देखने लगे। और लोग उठकर खड़े गए। नंबरदार ने तार ले जाकर नारदमुनि को दे दिया। उन्होंने तार पढ़ा और वहीं चबूतरे पर रख दिया।

मैं भी उठकर वहां चला गया था। लोगों ने उनसे पूछा कि, "कैसा तार है ?" परंतु उन्होंने कोई उत्तर नही दिया। तब तक किसी व्यक्ति ने तार उठा लिया था। मैंने पढा उसमें लिखा था, "अजीत की हत्या कर दी गई है।"

"अजीत है कौन ?" मैंने पूछा। नारदमुनि ने मेरी ओर देखा परंतु

बोले कुछ नहीं। तब तक तार कई हाथों में घूम चुका था। कुदरत ने बताया कि अजीत उनके लड़के का नाम है। गांव में जहां वह रहता था, वहां किसी से कुछ दुश्मनी चल रही थी। नारदमुनि ने मिलने वाले लोगों से कई बार अजीत को कहलवाया था कि वह गांव में न रहे। परंतु अब यह तार आया था।

धीरे-धीरे बैरक के सभी लोग नारदमुनि के चबूतरे के चारों ओर जमा हो गए। बारी-बारी से वे तार लेकर पढ़ रहे थे। उसमें तीन दिन पुरानी तारीख थी। संभवतः वह कई जगह घूमकर यहां पहुंचा था।

नारदमुनि खामोश बैठे थे। लगता था समझ नहीं पा रहे हैं कि लोग उन्हें क्यों घेरे खड़े है? आखिर काफी देर बाद नारदमुनि एक वाक्य बोले, "मैं वहां होता तो यह कभी न होता।"

"क्या उम्र थी लड़के की?" किसी ने पूछा।

"बाइस।"

सभी लोग अनुभव कर रहे थे कि उन्हें सांत्वना देना आसान नहीं है। अतः सभी खामोश थे।

"आप चाहें तो आपको रिहाई मिल सकती है। कहिए तो मैं सुपरिंटेंडेंट से बात करूं?" प्रभात ने कहा।

नारदमुनि ने आंखें उठाकर प्रभात की ओर देखा।

"मेरे जाने से अब क्या होगा? देर नही हो गई अब।" उन्होंने कहा।

मैंने देखा, उनकी आंखें डबडबा आई थीं।

प्रभात ने इशारा किया। लोग धीरे-धीरे वहां से हट गए। प्रभात उनके चबूतरे पर बैठ गया और उन्हें समझाने लगा कि वहां और कार्यवाही करनी होगी। पुलिस-रिपोर्ट वगैरह। ऐसे केस में छुट्टी मिल जाती है। फिर लौट आइएगा। सिर्फ एक दर्ख्वास्त देनी पड़ेगी।

नारदमुनि काफी देर चुप रहे तब बोले, "मैं चला जाऊंगा तो यहां जितने लोग बंद हैं इनका क्या होगा?

"उसकी आप क्यों फिक्र करते हैं?"

"फिर कौन फिक्र करेगा?"

"दो-चार दिन में लौट ही आइएगा। तब देखा जाएगा।"

"नही, मैं नहीं जाऊंगा।" उन्होंने अंतिम रूप से कहा।

हम लोग वहां से चले आए। नारदमुनि थोड़ी देर वैसे ही चबूतरे पर बैठे रहे फिर अपने कागज-कापी एक ओर करके चुपचाप लेट गए। अपने दोनों हाथ मोड़कर हथेलियां उन्होंने सिर के नीचे कर लीं और एक पैर दूसरे पैर पर चढ़ा लिया। वे छत की ओर देख रहे थे, जहां एक अकेला कबूतर लोहे की राड पर बैठा चोंच से अपनी पीठ खुजला रहा था।

शाम को खाना परेड के समय मैंने देखा सब लोग लाइन में बैठे थे और नारदमुनि खाना परोस रहे थे। दो-एक बार अन्य लोगों ने उनके हाथ से बाल्टी लेनी चाही परंतु उन्होंने उन्हें डांट दिया।

जेल की भाषा में एक शब्द होता है तन्हाई। तन्हाई का अर्थ होता है अकेलापन। जेल में जो खतरनाक किस्म के कैदी होते हैं या फिर जिन्हें सजा देनी होती है, उन्हें अकेली कोठरियों में बंद कर दिया जाता है। उसी के अंदर खाना, पीना, पाखाना, पेशाब सब। इसी को तन्हाई कहते हैं।

जब से हम लोगों को 'बी० क्लास' मिला था दूसरों की अपेक्षा हम लोगों को काफी स्वतंत्रता मिल गई थी और हम लोग लगभग सारा जेल घूम लिए थे। लेकिन तन्हाई वाली बैरक हमने अभी तक नहीं देखी थी। वह बिलकुल अलग थी। साधारणतया कोई उसके अन्दर आ-जा नहीं सकता था। तभी एक दिन दोपहर के समय मैं, प्रभात, गौतम और रशीद नबी की बैरक में बैठे थे। इधर-उधर की बातों के बीच किसी प्रसंग में तन्हाई का जिक्र आ गया। मैंने वैसे ही प्रभात से कहा कि यह तन्हाई क्या होती है, देखना चाहिए।

"आप लोग तो बी० क्लास वाले हैं", नबी ने कहा "जेलर से कह कर चले जाइए, देख आइए। सुना है, वहां कोई शायर भी बंद हैं।"

"शायर ?"

"जी हां। कोई मासूम मोहनलाल गंजवी हैं।"

"यह यहां कैसे आ गए ?"

"आए तो शायद किसी चार सौ बीस में हैं। मगर यहां आकर शायर

हो गए हैं। रात में उठ-उठ कर गजलें गाते हैं। अपने माशूक का नाम ले-लेकर चिल्लाते हैं या तो पागल हो गए है, या फिर बने हैं।"

"आपको कैसे मालूम ?"

"हम लोग पहले पांच नंबर में थे। वहां सुनाई देता था। काफी जोर से चिल्लाते हैं।"

"जी हां, बाबूजी सही बात है", चबूतरे के नीचे बैठे हुए नंबरदार ने कहा। वह देर से फर्श पर उकडू बैठा हम लोगों की बात ध्यान से सुन रहा था।

"तुमने देखा है ?" मैंने पूछा।

"जी हां, जाली नोट छापने में पकड़े गए थे। पहले तीन नंबर में थे। मेरी ड्यूटी थी। मैं रोज देखता था उनको। गाते बड़ा अच्छा हैं।"

"तन्हाई में क्यों भेज दिए गए ?"

"दिमाग खराब हो गया है उनका। जेलर के ऊपर पानी फेंक दिया था। औल फौल बकने लगे थे।"

"जाइए न, आप भी मिल आइए।" नबी ने कहा।

"जेलर इजाजत नहीं देगा।" प्रभात ने कहा।

"मेरे साथ चलिए, मैं दिखा लाऊंगा आप लोगों को। मगर सब लोग चलिएगा तो मुश्किल है। एक-दो आदमी चलिए।" नंबरदार ने कहा।

"दो आदमी चलेंगे। मैं और यह।" मैंने प्रभात के लिए कहा "तुम ले जा पाओगे।"

"चार बजे मेरी डियुटी खतम होगी । साढ़े चार बजे के करीब अस्पताल आइएगा। वहीं मैं मिल जाऊंगा। बगल में ही तो है।"

"ठीक है। हम लोग आ जाएंगे। तुम्हारा नाम क्या है ?" मैंने उससे पूछा।

"बद्री।" उसने बताया।

"अरे इनकी न पूछो।" नबी ने कहा "यह अपने अफसर की एवज में जेल काट रहे हैं।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब क्या ? यही जो मैं बता रहा हूं। जुर्म इनके साहब ने किया,

जेल ये भुगत रहे हैं।"

"क्या हुआ था ?" हमने पूछा।

"हुआ क्या बाबूजी", बद्री ने बताया "सरन साहब हैं न, रेवेन्यू में डिप्टी सेक्रेटरी जो हैं।"

"हां, हां।"

"हम उनके ड्राइवर थे। नई-नई गाड़ी खरीदी थी उन्होंने। हम उनकी गाड़ी चलाते थे और सिखाते भी थे चलाना उनको। काफी आ गया था। तभी एक दिन सीतापुर में उनकी ससुराल थी, वहीं गाड़ी लेके गए। बीबी-बच्चों को बिठा के जा रहे थे। कहीं सिनेमा-विनेमा देखने दाखने। वहीं एक्सीडेंट कर दिया एक लड़की कुचल कर मर गई। नंबर-वंबर नोट हो गया। उनके पास तो ड्राइविंग लाइसेंस था नहीं। हम से बोले, तुम कह दो कि तुम चला रहे थे गाड़ी। हम तुमको बचा लेंगे। वही हमने कह दिया।"

"फिर बचाया नहीं तुमको।"

"कोशिश तो बहुत की। मगर वह लडकी थी किसी बड़े आदमी की। इसलिए सजा हो गई।"

"कितने दिनों की ?"

"अरे अब तो काट लिए, तीन महीना रह गया है रिहाई में।"

"सजा कितने दिनों की हुई थी ?"

"डेढ़ साल की।"

"तो तुम यहां हो। और तुम्हारे बीबी-बच्चे ?"

"यहीं शहर में हैं ?"

"उनका खर्चा कैसे चलता है ?"

"सरन साहब देते हैं पचास रुपया महीना।"

"पचास रुपया महीना, बस !"

"हमको भी पचास देते थे। हां, खाना-कपड़ा और देते थे।"

"सुना आपने।" नबी ने कहा "यह है बड़े आदमियों की बात। पचास रुपया महीना में किराए का आदमी मिल गया जेल काटने को।"

"अरे बाबूजी तीन साल उनकी अर्दली में रहे। नमक खाया है उनका क्या हुआ जो इतना कष्ट भोग लिया। जैसे शहर रहते, वैसे यहां रह

रहे हैं।"

"और नौकरी ? यहां से छूटोगे तो दुबारा मिल जाएगी ?"

"देखा जाएगा।"

"ठीक है भय्या। जब तक तुम जैसे आदमी है तभी तक यह दुनिया कायम है।" नबी ने कहा।

शाम को हम डिस्पेंसरी गए, तो बद्री हमारा इंतजार कर रहा था। डिस्पेंसरी की बगल में ही तन्हाई वाली बैरक थी। गेट पर चौकीदार खडा था जिसे हमने डिस्पेंसरी जाते वक्त देखा था।

"चलिए", बद्री ने कहा "हम आपका इंतजार ही कर रहे थे। हमारे पीछे-पीछे चले आइएगा। गेट पर चौकीदार रोके तो रुकिएगा नहीं। वैसे आपसे बोलेगा नही।"

हम लोग साथ-साथ चल दिए।

"आप थोडा पीछे हो जाइए", उसने हमे समझाया "मैं जाकर फाटक खुलवाता हू। फाटक खुल जाए और जैसे ही मैं अंदर जाऊं आप भी आ जाइएगा।"

"ठीक है।" हम थोडा पीछे हो गए।

उसने आगे जाकर चौकीदार से पता नहीं क्या कहा। चौकीदार ने फाटक खोल दिया।

उसने हमें हाथ से इशारा किया और अंदर चला गया। हम लोग भी आगे बढकर फाटक के अंदर चले गए। चौकीदार ने हमें रोकना चाहा। तभी उसने कहा "आने दो बी० क्लास के आदमी हैं।"

चौकीदार बिगड़ता रहा परंतु तब तक हम अंदर जा चुके थे। अंदर एक बैरकनुमा इमारत बनी थी। उसके बीच में एक बरांडा था और दोनों ओर एक लाइन में चार-चार कोठरियां बनी थी। उनमें लोहे के सींखचों के दरवाजे थे। घुसते ही बांए हाथ पर जो बैरक थी वह खाली थी। बगल वाली बैरक में एक आदमी बंद था, जो लगभग नंगा था।

"पागल है यह।" बद्री ने बताया।

तभी दूसरी ओर कोठरी से आवाज आई "नमस्ते बाबू जी।"

मैंने मुड़कर देखा। रमेश था। आठ नंबर बैरक में जो पेड़ पर चढ़ गया था। उसके पाव में बेड़ी पड़ी थी मैंने गौर किया, वह बहुत दुबला हो गया था। उसके शरीर मे कई जगह जख्म भी थे।

"कहो कैसे हो यहां ? मैंने पूछा।

"छूटूंगा यहां से तो इस मादर···सुपरिंटेंडेंट को बताऊंगा।" वह बोला, "एक सिगरेट हो तो दे दीजिए।"

मेरी जेब में पूरा पैकेट था। मैंने दो-तीन सिगरेट निकालकर उसे दे दीं।

एक कोठरी मे वह कैदी था जिसने दो नंबर मे एक अन्य कैदी की हत्या की थी। उसके पैरों में भी बेड़ियां थीं। उसने मुझे देखा परंतु बोला कुछ नहीं। एक दूसरी कोठरी में शायर साहब थे। वह शक्ल ही से शायर लग रहे थे। उनके बाल और दाढी बढ़ी हुई थी। दुबला-पतला शरीर। दांतो पर कत्थे की पर्त मुस्तकिल तौर से जम गई थी। वे कैदियों वाले कपड़े पहने थे जिसे फाड़कर चाके गरेबां कर रखा था।

"क्या आप मुझे एक सिगरेट देंगे ?" मुझे देखकर उन्होंने पूछा।

"जरूर।" मैंने एक सिगरेट उन्हें दे दी।

"जलवा भी दीजिए।"

मैंने सिगरेट जलवा दी।

"कहिए इधर कोई ताजा गजल नहीं कही ?" मैंने पूछा।

"सुनिए, मतला अर्ज है।"

"इरशाद।"

वह काफी सुरीली आवाज में गाने लगा।

मैंने गौर किया बद्री बरांडे में नहीं था। बाहर चौकीदार शायद उस पर बिगड़ रहा था।

"चलो अब ज्यादा देर न रुको यहां ?" प्रभात ने कहा।

मैं चलने लगा, तो शायर साहब बोले "सुनिए मेरी रजिया मिले तो उसे कह दीजिएगा, मासूम मोहनलाल गंजवी मरते दम तक उसका रहेगा।"

"कह दूगा।" मैंने कहा।

तभी फचाक से मेरे ऊपर ढेर-सा गंदा पानी गिरा जो शायर साहब ही की मेहरबानी थी। मेरे सारे कपड़े भीग गए।

हम जल्दी से बाहर निकल आए। चौकीदार और बद्री दोनों गेट पर खड़े थे। हम लोगों के गेट के बाहर निकलते ही चौकीदार ने फाटक में ताला लगाया और बद्री को हाथ पकड़ कर घसीटता हुआ चक्कर मुंशी के पास ले गया। हम लोग भी चले आए।

"यह बिना किसी हुकुम से इन लोगों को तन्हाई दिखाने ले गया था। अंदर।" उसने चक्कर मुशी से शिकायत की।

चक्कर मुंशी ने एक निगाह हम लोगों को देखा। फिर बद्री को घूरने लगा। घूरते-घूरते इतने जोर का झापड़ उसने उसके मारा कि वह गिरते-गिरते बचा।

"मार क्यों रहे हो भाई इसे।" मैंने कहा।

"मार रहे हैं।" उसने इस तरह कहा मानो झापड़ मारना मारना न हो।

"अभी देखिएगा क्या होता है इस साले के साथ। बिना हुकुम तू गया कैसे उसके अंदर।" और वह उसे बुरी तरह थप्पड़, लात मारने लगा। वह फर्श पर गिर पड़ा और गिरकर हाथ जोड़ने लगा।

हम लोगों ने उसे रोकना चाहा। परंतु वह हमारे ऊपर बिगड़ गया। "चलिए आप लोग अपनी बैरक में जाइए।" उसने धमकी दी।

"मैं कहता हूं कि हम लोग······"

"मैं कहता हूं आप अंदर जाइए, अपनी बैरक में।"

प्रभात मेरा हाथ पकड़कर मुझे अंदर ले आया।

दूसरे दिन हमें पता चला कि बद्री की नंबरदारी छीन ली गई है और उसे खुद तन्हाई में डाल दिया गया है।

हमें बहुत अफसोस हुआ।

नबी को बताया तो वह जोर से हंसने लगा, "तन्हाई दिखाते-दिखाते बेटा खुद तन्हाई देखने लगे। साला है ही चूतिया। नहीं तो आज जेल में क्यों होता।" उसने कहा।

हम लोगों की शिनाख्त की तारीख निश्चित हो गई थी असिस्टेंट जेलर वर्मा ने—जिसने शुरू में हम लोगो के नाम रजिस्टर में दर्ज किए थे, और जो शिनाख्त आदि करवाने का इंचार्ज था—हम लोगो को दो दिन पहले सूचित कर दिया था। हमे यह भी पता चला था कि जेल वाले इसमे हमारी काफी सहायता कर सकते है। यदि वे चाहें तो किसी की शिनाख्त हो ही नही सकती। नबी तो यहां तक कहता था कि वे चाहे तो मुलजिम को लाइन मे खड़ा ही न करे। मित्तर को जब से यह बात पता चली थी वह काफी सक्रिय हो गया था। संभवत. वर्मा से भी वह मिल आया था। जिस दिन शिनाख्त होनी थी, उसके एक दिन पहले उसने हम लोगो को बताया कि यदि हम लोग एक-एक हजार रुपये दें तो हमारी शिनाख्त नही होगी। सारा धन पहले से नही देना होगा। केवल पाच सौ पहले देने होंगे। यदि पाच सौ भी संभव न हो तो कुछ कम पर भी वह तय करवा सकता है। शेष धन बाद मे देना होगा।

हम लोगो ने मना कर दिया।

"हमे रिश्वत नही देनी। जो होगा देखा जाएगा।" प्रभात ने कहा।

"सोच लीजिए दादा", मित्तर ने कहा "केस लडने मे एक हजार प्रति व्यक्ति से कम खर्च न आएगा और फिर पता नही क्या फैसला हो। सरकार जिस तरह से हम लोगो के खिलाफ है, आप जानते है।"

"सोच लिया है।" प्रभात ने कहा।

मित्तर चुप हो गया। परंतु बाद मे उसने गुप्ता और विजय आदि से अलग-अलग बात की। गुप्ता कुछ-कुछ राजी भी हुआ। परंतु हमारे समझाने से वह मान गया।

मित्तर से हम लोगों ने कह दिया कि वह चाहे तो अपने लिए अकेले जो भी ठीक समझे करे। वह कुछ बिगड़ गया, "मुझको जो करना होगा, वह तो मैं करूंगा ही", उसने कहा, "आपकी राय की आवश्यकता नहीं है मुझे।"

जिस दिन शिनाख्त होनी थी उस दिन सुबह नौ बजे के लगभग हमें

कोराटीन ले आया गया। यह वही स्थान था, जहां हम लोगों को शुरू-शुरू में कंबल, तसले, कटोरे आदि मिले थे।

हमारे साथ लगभग सभी गन्ना कामदार संघ तथा अन्य बैरक से भी तमाम लोगों को वहां बुलाया गया। उन्हीं लोगों में से चुनकर हम में से हर व्यक्ति के साथ नौ-नौ आदमी लाइन में खड़े किए जाने थे। इस प्रकार कोई सौ सवा सौ आदमी वहां जमा हुए। वैसे जेलर ने हम से कहा था कि हम चाहें तो बाहर से भी आदमी बुलवा सकते हैं। परंतु हमने मना कर दिया था। सबसे पहले हम लोगों के दाढ़ी के बाल तराशे गए। जब से हम जेल आए थे, तब से हमारी शेव नहीं बनी थी। जब हम लोग आए थे, तो हममें से किसी की एक दिन तो किसी की दो दिन की शेव थी, जो रजिस्टर में दर्ज थी। उसी रिकार्ड के आधार पर हम लोगों की शेव काटी गई। इसके बाद हम लोगों से मिलने-जुलने चेहरों वाले व्यक्ति चुने गए। इस काम में सभी ने विशेषकर नबी, कुदरत और राइटर ने, जो वहां मौजूद थे, हमारी मदद की। अंतिम फैसला उन्हीं लोगों ने किया। इसके बाद हम लोगों ने एक जैसे कपड़े पहने। चूंकि पतलूनें इतनी थी नहीं अतः सभी ने पाजामे, कमीज या कुर्ते पहने। जो पतलूनें पहने थे उन्होंने उसे उतार दिया और दूसरों से पाजामे मांगकर पहने। राइटर ने सुझाव दिया कि हम सभी टोपियां लगा लें, क्योंकि हम लोगों के बालों की स्टाइल अलग-अलग थी जिससे हमें पहचाना जा सकता था। उसी ने वर्मा से कह-कर हम लोगों को जेल के स्टाक से टोपियां दिलवा दीं। हम लोगों ने टोपियां लगा लीं। इसके बाद वर्मा ने हमें अलग-अलग लाइनों में खड़ा कर दिया। तब कागज की छोटी-छोटी चिन्नियां बनाई गईं और उन्हें हमारे चेहरों पर इधर-उधर, नाक, गाल, ठोढ़ी, माथे आदि पर चिपका दिया गया। इस तरह पूरे अस्सी आदमी कार्टून बनकर दस-दस की आठ लाइनों में वहां खड़े हुए।

जो लोग बच रहे वर्मा ने उनको वापस बैरक में जाने को कहा। कुछ लोगों को जिनमें राइटर भी था, प्रार्थना करने पर वर्मा ने वहीं हम लोगों से दूर कोराटीन के अहाते में एक वृक्ष के नीचे रुक जाने दिया। शेष वापस चले गए।

मजिस्ट्रेट और गवाह संभवतः तब तक आ गए थे और बाहर आफिस मे प्रतीक्षा कर रहे थे। यहां मब ठीक हो जाने के बाद वर्मा मजिस्ट्रेट को लेने गया। मजिस्ट्रेट के साथ सरकारी वकील और हम लोगो का वकील था। उन लोगों के लिए उसी वरांडे मे जहां हमें खडा किया गया था, एक सिरे पर कुर्सियां और एक मेज डाल दी गई। हमारे वकील ने हम लोगों को देखते ही पहचान लिया और पहचानकर मुसकराया। हमे भी एक-दूसरे की हुलिया देखकर हंसी आ रही थी और हम एक-दूसरे से मजाक कर रहे थे।

मजिस्ट्रेट कुर्सी पर बैठा कुछ लिखता रहा। फिर हम लोगों की बारी-बारी मे बुलाकर उसके सामने पेशी हुई और उसने रजिस्टर मे लिखी हुई हमारी हुलिया से शक्लें मिलाईं। सभवतः यह संतोष करने के लिए कि हमी वे व्यक्ति या मुलजिम है, जिनकी शिनाख्त होनी है।

हम लोगो ने फिर मजिस्ट्रेट के सामने प्रतिवाद किया कि हमे जेल मे लाने से पहले थाने पर गवाहो को बुलाकर पहचनवा दिया गया था। परंतु मजिस्ट्रेट ने हमारी बात पर कोई ध्यान नही दिया।

इसके बाद गवाहो को बुलवाया जाने लगा जिन्हे बाहर ही रोक दिया गया था और एक-एक कर उन्हे बुलाया जा रहा था। मबसे पहले एम० एल० ए० महोदय को बुलाया गया। उसने आकर एक सिरे से एक-एक लाइन के सामने चक्कर लगाना शुरू किया। हमे मालूम हो गया था कि गवाह को लाइन के सामने तीन बार गुजरने का मौका दियाज ाता है। उसे कुछ बोलना नही होता। केवल जिस आदमी की शिनाख्त उसे करनी है उसके ऊपर हाथ रखना होता है।

जब वह पहली लाइन के सामने, जिसमें रशीद था टहल रहा था तो हम सभी अपने-अपने स्थानों पर खड़े उसे देख रहे थे लाइन के हर एक व्यक्ति को घूरता हुआ वह एक सिरे से दूसरे सिरे तक आया फिर वापस गया और दुबारा फिर वापस आया और तब बिना किसी पर हाथ रखे आगे बढ गया। इसके बाद जयसिंह वाली लाइन थी। वहां भी उसने इसी प्रकार किया। तब गौतम की लाइन थी, वहां भी वह यही करता रहा।

मैं सोचने लगा कि यह जान-बूझकर नहीं पहचान रहा है, या वास्तव में पहचान नही पा रहा है। तभी वह मेरी लाइन की तरफ बढ आया। जाने क्यों, मेरा दिल, धक-धक करने लगा। मुझे ऐसा लगा कि सारी लाइन में वह मुझे ही घूर रहा है। उसने उसी प्रकार लाइन के सामने तीन चक्कर लगाए और हर बार मुझे लगा कि वह मेरे ऊपर हाथ रखने वाला है। मेरा ख्याल है मेरे पैर भी कुछ-कुछ कांपने लगे थे। ऐसा क्यों हो रहा था, मैं समझ नहीं पाया। मैंने कोई भी जुर्म नहीं किया था। फिर भी मैं क्यों नर्वस हो रहा था, मैं आज तक नही जान सका। खैर, वह मेरी लाइन से भी आगे बढ गया और इसी तरह बिना किसी को पहचाने हुए सभी लाइनों से गुजर गया। हमारी जान में जान आई और हम फिर एक-दूसरे को देखकर मुसकराए।

इसके बाद डिप्टी सेक्रेटरी वर्मा साहब आए। वह बेचारे चुपचाप एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहल कर वापस चले गए। मेरा विचार है कि ठीक से किसी की ओर देख भी नहीं रहे थे।

तब इश्तिमाक आया जिससे हमारी यूनियन के सदस्यों का झगडा हुआ था। वह हम सभी को अच्छी तरह पहचानता था। मैं सोच ही रहा था कि वह क्या करेगा तभी जैसे ही वह पहली लाइन की ओर बढ़ा उसने रशीद के ऊपर हाथ रख दिया। उसके बाद जयसिंह, तब गौतम और फिर मैं और इस प्रकार सबके ऊपर हाथ रखता हुआ वह चला गया। केवल मित्तर को उसने छोड़ दिया। मैं उसकी ओर देखकर मुसकराया। परंतु वह गंभीर बना रहा।

राइटर ने हम लोगों को पहले ही समझा दिया था कि एक बार पहचान जाने के बाद हम लोग लाइन में अपना स्थान बदल लें। हमने ऐसा ही किया। परंतु इसके बाद जो गवाह आया, उसने भी मित्तर को छोड़कर हम सभी को पहचान लिया। उसके बाद एक अंतिम गवाह आया उसने भी मित्तर और विजय को छोडकर सभी को पहचान लिया।

इसके बाद मजिस्ट्रेट और वकील आदि चले गए। हम लोगों की लाइनें टूट गईं और हम एक-दूसरे से बातें करने लगे। टोपियां उतार-

उतारकर हमने वराडे मे एक स्थान पर ढेर कर दी। अच्छा-खासा अबार टोपियो का वहा लग गया। चेहरे से कागज के टुकडे उखाडकर फेंक दिए और अपने-अपने कपडे बदलने लगे।

मित्तर के छूट जाने मे अब कोई सदेह नही रह गया था। वह बहुत प्रसन्न था और जाने क्यो हम लोगो से बात नही कर रहा था। शायद सोच रहा था कि हम लोग असली मुलजिम हैं जबकि वह एक शरीफ आदमी है।

नबी और राइटर का कहना था कि हम लोग भी छूट जाएगे। परतु हम लोग इस बारे मे उदासीन थे। इतना निश्चित था कि एक आध दिन मे हम लोगो की जमानत हो जाएगी जैसा कि वकील ने चलते समय हमे बताया था। उसने कहा था कि यदि सभव हुआ तो आज ही अन्यथा कल जमानत के लिए दरख्वास्त दे दी जाएगी।

हम लोग वापस बैरक मे चले आए। मित्तर आते ही अपना सामान सहेजने लगा।

"गोइग जस्ट नाऊ। रिलीज आर्डर गाट ?" गौतम ने उसे छेडा।

उसने घूरकर गौतम की ओर देखा। बोला कुछ नही। उसके बाद अपना सामान उभानी मिल वाले पडितजी के पास रखकर बैरक से बाहर चला आया।

"वर्मा के पास जा रहा है।" गौतम ने कहा, "देखू जाकर ?"

"रहने दो। तुमको क्या करना।" प्रभात ने कहा।

सुबह हमे कुछ जल्दी ही उठा दिया गया। बल्कि काफी जल्दी। मैंने देखा, अभी सूरज भी ठीक से नही निकला था। हमारी बैरक मे जो कैदी रात मे रखे जाते थे, उन्हे बाहर से जाया जा रहा था। गन्ना कामदार सघ के सभी लोग लाइन मे खडे होकर प्रार्थना करने की तैयारी कर रहे थे। अब तक इस प्रार्थना से मुझे चिढ-सी हो गई थी। प्रभात का मूड भी इससे काफी खराब रहता था। हम लोग देर तक सोने के आदी थे। इस प्रार्थना की वजह से हमे जल्दी उठ जाना पडता था।

आज मैं जान-बूझकर नहीं उठा। मुझे कुछ खीज हो रही थी। इतनी सुबह उठा दिए जाने पर। प्रभात भी बैठा रहा। बैठे-बैठे हम लोग सिगरेट पीते रहे। और लोग लाइन में खड़े होकर प्रार्थना करने लगे। मित्तर उनमें सबसे आगे था। प्रार्थना के बाद रोज की तरह लोग इधर-उधर मैदान में बिखर गए। कुछ लोग लैट्रीन जाने की तैयारी करने लगे। जो बीड़ी-सिगरेट पीने के आदी थे उन्होंने बीड़ी-सिगरेट सुलगा ली। कुछ लोग हथेली में तंबाकू मलने लगे। बैरक तब तक खाली हो गई थी और दो कैदी उसे धो रहे थे। मैंने और प्रभात ने भी मजबूरन अपने-अपने बिस्तर लपेट लिए।

बैरक धुल जाने पर हम अपने बिस्तर अंदर ले आए और उन्हें चबूतरों पर बिछाकर दुबारा सो गए।

कोई नौ बजे हमारी आंख दुबारा खुली। खाना बनाने वाला पंडित और रामदीन तब तक आ चुके थे। रामदीन का पत्र उसके गांव के लेखपाल के नाम मैंने लिख दिया था और उसे पोस्ट भी करवा दिया था। रामदीन को विश्वास नही था कि उसका उत्तर आएगा।

"क्यों नहीं आएगा ?" मैंने पूछा।

"पता नहीं उन्हें मिले कि न मिले।" वह बोला। हर बात में उसका दृष्टिकोण एक अजीब उदासीनता का सा हो गया था।

पंडित अपने लिए सब्जी आदि बचाकर रख लेता था। उसे कम ही देता था। यही नहीं, खाना बनाने के अतिरिक्त सारा काम वह उसी से लेता था। परंतु उसने कभी इस बारे में कुछ नहीं कहा। लगता था उसे किसी से कोई शिकायत नहीं है।

और सब लोग तब तक नहा-धो चुके थे। हम लोगों ने चाय बनवाकर पी और दो-तीन सिगरेट फूंकने के बाद लैट्रीन की तैयारी करने लगे।

नहा-धोकर हम लौटे तब तक पंडित खाना बना चुका था। आज हम लोगों ने सब्जी ही पकवाई थी। वैसे मीट हमें मिला था परंतु उसे हमने नबी को भिजवा दिया था। इससे पहले एक दिन गल्ला कामदार संघ के लोगों को भी हम मीट दे चुके थे। रोज-रोज मीट खाने से हमारा पेट भी कुछ खराब रहने लगा था।

दोपहर में सख्त धूप हो जाती थी। खाना खाकर हम प्राय: आराम करते थे। कोई एक बजे खाना खाया। उसके बाद कुछ देर गप करते रहे। तब फिर अपने-अपने चबूतरों पर लेट गए।

कोई तीन बजे मोतीलाल ने हमें आकर बताया कि अभी-अभी सूचना आई है कि हम लोगों की जमानतें मंजूर हो गई हैं। एक आध घंटे में रिलीज आर्डर आ जाएगा। उसने बताया कि कचहरी से किसी का फोन आया था जेलर के पास। मित्तर यह खबर सुनते ही उठकर बैठ गया। प्रत्यक्ष रूप से वह प्रसन्न दिखाई दे रहा था। अपना सामान उसने कल ही सहेज लिया था। इतमिनान के लिए वह उसे दुबारा खोलने-बांधने लगा।

वैसे हम सभी प्रसन्न थे। परंतु यह विचार कि आज के बाद से हम लोग यहां नही होंगे हमे कुछ अजीब-सी अनुभूति दे रहा था। मुझे लग रहा था जैसे मैं अपने परम संबंधी और परिचितों को छोड़कर जा रहा हू। गन्ना कामदार संघ के लोग भी इस बात से प्रसन्न थे कि हम लोगों को जेल की कैद से छुट्टी मिल रही थी। परंतु वे भी उदास थे कि हम लोगों का साथ छूट रहा था। कुदरत वगैरह जो हम लोगों के साथ ताश खेला करते थे, खासतौर से ज्यादा उदास थे।

उझानी मिल के पंडितजी और उनके साथी जो रोज इस समय आराम किया करते थे, जब मे यह खबर आई थी, उठकर अपने चबूतरे पर बैठ गए थे। हम लोगों के वहां से जाते समय तक वे दुबारा नहीं लेटे। ख्यालीराम हम लोगों के पास शायद आखिरी सिगरेट पीने चले आए थे। खाना बनाने वाले पंडित ने जब से यह सुना था हम लोगों की तारीफ किए जा रहा था। वह जल्दी ही छूटने वाला था और हम लोगों से कह रहा था कि छूटने के बाद वह आकर हम लोगों से मिलेगा। हमारा पता भी उसने नोट कर लिया था।

नारदमुनि अपने लड़के की मृत्यु के बाद से कुछ चुपचाप ही रहा करते थे। वह भी उठकर हम लोगों के पास आए और हमारे छूटने पर प्रसन्नता व्यक्त की। इसके पश्चात् वह फिर अपने चबूतरे पर लौट आए।

अगर किसी के ऊपर इस बात की कोई प्रतिक्रिया नहीं थी तो वह था रामदीन। जैसे उसकी समझ में ही न आ रहा हो कि अचानक बैरक में यह

खलबली क्यों मच गई है। वह चुपचाप एक कोने में सब लोगों के चेहरे ताक रहा था ।

तभी असिस्टेंट जेलर ने आकर हम लोगों से कहा "मुबारक हो, आप लोगों का रिलीज आर्डर आ गया है। वारेंट बन रहे हैं। कोई एक घंटे में आप लोग रिहा हो जाएंगे।"

हमने उसे धन्यवाद दिया और सिगरेट पीने को दी । एक मिनट वह वहीं बैठकर सिगरेट पीता रहा तब उठकर खड़ा हो गया।

"अच्छा भाई, अब आप लोग अपना सामान वापस कर दीजिए या चाहे तो शाम का खाना खाकर जाइए।" उसने कहा।

"इच्छा तो यही थी कि एक-दो दिन और खाते हम लोग । ईमानदारी की बात तो यह है कि यहां जो मिलता है, वह हम लोग घरों में आसानी से अफोर्ड नही कर सकते।"

वह हंसने लगा "और रहिए न दो-चार दिन।"

"नेक्स्ट टाइम।" गौतम बोला।

"क्यों ? एक बार जी नहीं भरा ?"

"अभी कहां। चक्की तो अभी चलाई ही नहीं हमने।" सभी लोग हंसने लगे।

हम लोगों ने सामान उसे दे दिया। वह रामदीन और पंडित के ऊपर सामान लदवाकर चला गया। सामान लेकर जाते समय रामदीन की समझ में कुछ आया।

"तो क्या बाबू आप लोग जा रहे हो ?" उसने हमसे पूछा।

"हां।" हमने कहा।

रामदीन ने दूसरा प्रश्न नहीं किया।

चुपचाप सामान लेकर चला गया। पंडित थोड़ी देर बाद वापस आ गया। शायद वह हम लोगों से मिलने के लिए कोई बहाना बनाकर थोड़ी देर की छुट्टी लेकर आया था।

तभी थोड़ी देर बाद नंबरदार हम लोगों को बुलाने आ गया। हमने सबसे हाथ मिलाकर विदा ली। कुछ लोग गले भी मिले।

"भूल तो नहीं जाइएगा हम लोगों को।" कुदरत ने कहा।

हमें लगा जैसे हम अपनो के बीच से अलग हो रहे हैं। सभी लोग हमे बैरक के फाटक तक पहुंचाने आए।

नबी वगैरह इसी आहते में दूसरी बैरक में थे। उनमे भी हम लोगो ने विदा ली। नबी ने भी हम लोगों का पता नोट किया और कहा कि छूटने पर हम लोगो से मिलेगा।

बाहर जाने से पहले मै और लोगो से विशेष रूप से गाइटर से मिलना चाहता था। परंतु और लोग जल्दी कर रहे थे। अत: मैं टाल गया। हां, दो मिनट के लिए हम लोग विश्वनाथ सिंह की बैरक में उनसे मिलने गए। उन्होने बड़े तपाक से हम लोगो से हाथ मिलाया।

"तुम लोगों से बडी उम्मीद है।" उन्होने कहा "तुम्ही लोग इस देश का नक्शा बदलोगे। हमारा क्या है? हमारी तो अब साझ की बेला है। आज चले या कल।"

चक्कर मे आकर मैं एक क्षण रुक गया। पहली बार हम लोग जब यहां आए थे, तो कैसा-कैसा लगा था। हालाकि सब कुछ वैसा ही था। चक्कर मुशी अपने केबिन मे बैठा ऊंघ रहा था। उसी के बगल में लकडी के स्टैंड पर पीतल का बडा-सा घटा टंगा था, जो हर घंटे-आध घंटे पर बजा करता था। बीच मे पानी का रहट लगा था जिसे रोज सबेरे कुछ कैदी चलाते थे और बगल के हौज में पानी भरा जाता था, जहा से घडो मे पानी सभी बैरकों को जाता था। रहट से मिली हुई छोटी-सी इमारत थी जिसके बरांडे मे कभी-कभी दिन मे सुपरिटेंडेंट कुर्सी डालकर बैठा करता था। इसी बरांडे मे पहले दिन हमे दो-दो की लाइन में बिठाकर हमारे नये कंबलों आदि की जगह पुराने कंबल मिले थे और हमें अलग-अलग बैरकों मे जाने का आदेश मिला था। सभी बैरकों के फाटक इसी चक्कर मे खुलते थे। हमारे बिलकुल सामने डिस्पेंसरी थी। ठीक उसी की बगल में तन्हाई बैरक थी जहां एक बेगुनाह आदमी हम लोगों की जिज्ञासा का शिकार होकर एक अंधेरी कोठरी में बंद था। पहले दिन सभी कुछ बड़ा ही भयावह और बेगाना-सा लगा था। आज सभी कुछ अपने घर की तरह। परिचित!

"चलिए देर हो रही है।" नंबरदार ने कहा तो हम लोग चल दिए।

चक्कर से हम लोगों ने गेलरी में प्रवेश किया जहां से हम लोग कितनी ही बार मुलाकात या शिनाख्त या डाक्टरी के लिए जाते समय गुजरे थे और जहां की दीवालों पर बड़े-बड़े अक्षरो में लिखा था—सत्य बोलिए, धर्म को कभी मत छोड़िए। मनुष्य का जन्म दूसरों की भलाई के लिए मिला है, आदि आदि।

गैलरी पार कर दूसरे सिरे के फाटक से हम निकले तो दाहिनी ओर कुछ कैदी रसोईघर मे काम कर रहे थे। शायद शाम की रोटी परेड के लिए रोटियां तैयार कर रहे थे। तभी बाईं ओर मेरी निगाह गई, तो मैं कुछ ठिठक-सा गया। आज पहली बार मैंने देखा, फांसी वाली बैरक का जंगला सुनसान था। दाढ़ी वाला वह कैदी नही था। कल जब हम शिनाख्त के लिए जा रहे थे, और लौटते समय, दोनों ही बार, मैंने उसे देखा था। वह रोज की तरह जंगले के सीखचो को पकड़े खड़ा था।

"वह कैदी कहां गया, फांसी बैरक वाला?" मैंने गेट पर बैठे चौकीदार से पूछा।

उसने हमारी बात का उत्तर नहीं दिया।

हम वर्मा के आफिस में आ गए। उसने सब कागज आदि तैयार कर रखे थे। हम लोगों के दस्तखत लिए रजिस्टरों पर और बोला, "जाइए अब तो नही आना लौटकर।"

"फांसी बैरक में एक कैदी था, दाढ़ी वाला, वह कहां गया?" मैंने वर्मा से पूछा।

"कौन कैदी?"

"एक था। मैंने उसे कई बार देखा है। वह जंगला पकड़ कर खड़ा रहता था।"

"उसका तबादला हो गया।"

"कहां।"

"दूसरी जेल।"

"कब?"

"कई दिन हो गए।"

"अभी कल तो मैंने उसे देखा था।" मैंने वर्मा को बताया।

"क्या कीजिएगा जानकर। रिहाई हो गई आपकी, जाकर घर वालों से मिलिए-मिलाइए।"

"नहीं, मैं जानना चाहता हूं। आपको कोई आपत्ति न हो तो बता दीजिए।"

वर्मा एक क्षण चुप रहा। फिर बोला, "उसे फांसी हो गई।"

"कब?"

"आज सुबह।"

मुझे लगा जैसे मेरे अंदर कुछ टूट रहा है।

"किस लिए फांसी हुई उसे? क्या जुर्म किया था उसने?" मैंने पूछा तभी मुझे अपने प्रश्न की मूर्खता का ध्यान आया। फांसी के मायने उसने किसी की हत्या की होगी।

परंतु किसकी? वर्मा ने बताया कि उसने अपनी पत्नी और बच्चों की हत्या की थी। मिल में छंटनी हो जाने के बाद काफी दिनों बेकार रहा था। तभी तंग आकर उसने ऐसा किया था। और अब स्वयं फांसी पर चढ गया था।

हम वहां से चले आए। उसी के आगे सुपरिंटेंडेंट का आफिस था। प्रभात ने मुझसे कहा, "चलो बद्री के लिए बात कर लें।"

आज सुबह ही हमने तय किया था कि हम सुपरिंटेंडेंट से बात करके उसे छुड़ाने का प्रयत्न करेंगे।

"तुम हो आओ। गुप्ता को ले लो। मैं नहीं जाऊंगा।" मैंने कहा। मेरा मन कुछ भी करने को नहीं हो रहा था।

"क्यों?"

"वैसे ही।"

प्रभात और लोगों के साथ चला गया। मैं बाहर खड़ा रहा।

बाहर काफी लोग हमारे स्वागत के लिए आए थे। वे फूल मालाएं लिए थे और हमें ले जाने के लिए कार का प्रबंध कर लाए थे वहीं से।

हमारे बाहर निकलते ही उन्होंने नारे लगाए और हम लोगों को फूल मालाएं पहनाईं। मैंने माला अपने हाथ में ले ली।

हम लोग किसी तरह कार में घुस-घुसाकर बैठ गए।

शाम हो आई थी। ढलते सूरज की किरणें जेल की दीवारों पर पड़ रही थीं, जो हमारे पीछे छोटी होती चली जा रही थीं।

□□